VATAK POOJA

वटक पूजा

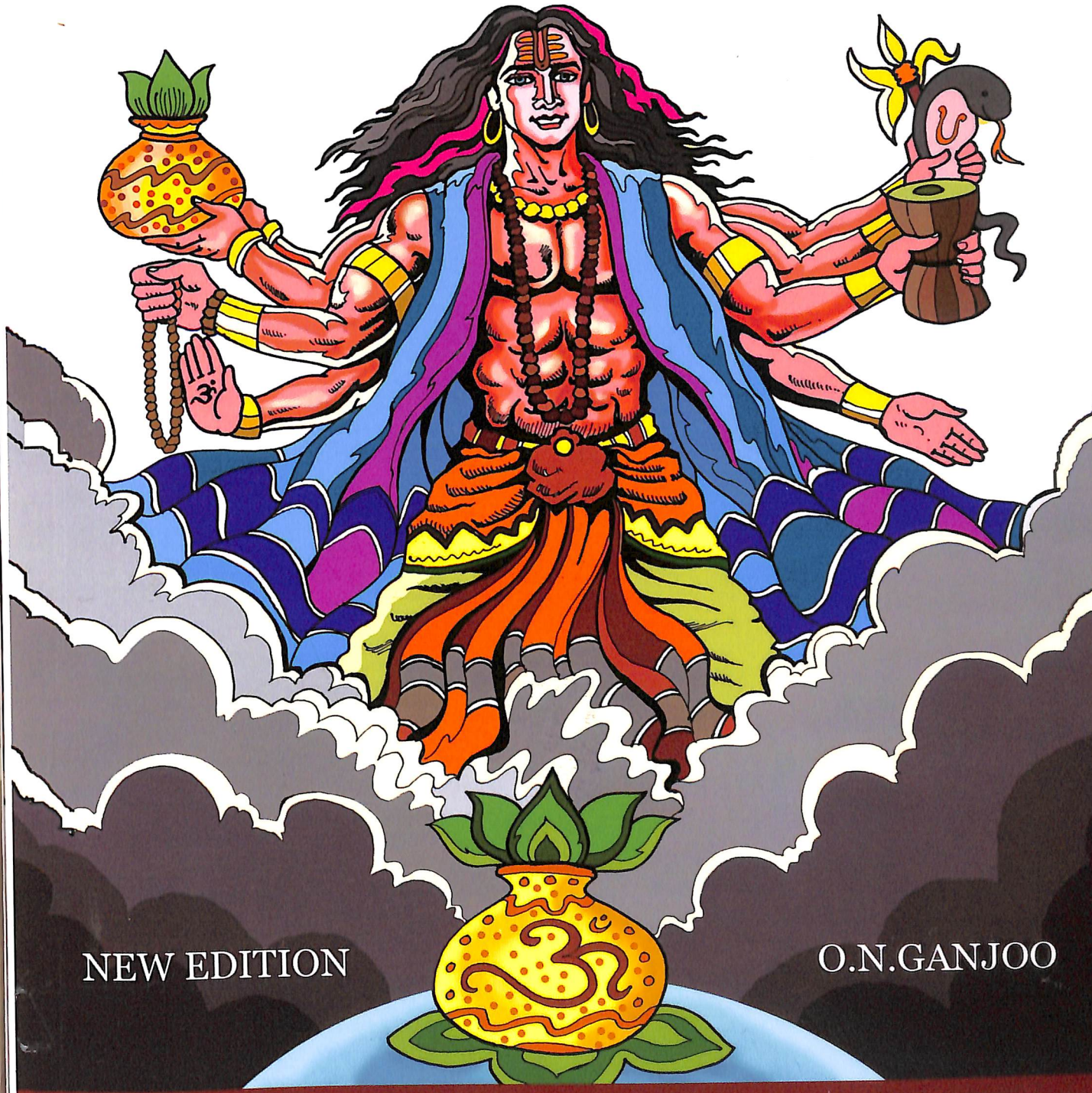

NEW EDITION

O.N.GANJOO

A COMPLETE ILLUSTRATED GUIDE TO VATAK POOJA

पूजा सामग्री

1. यज्ञोपवीत
2. पवित्र / तिनका द्रमुनका
3. कुशा / द्रब (द्रमुन का तिनका - अगर कुशा न हो)
4. विष्टर चार - कलश के लिये , वटुक भैरव के कुंभ के लिये प्रणीतपात्र के लिये, अर्घा (नारि कचुल के लिये),
5. चूना या चावल का आटा (ब्रह्म कलश डालने के लिये)
6. धूप-एक पैकेट
7. अगरबत्ती - एक पैकेट
8. काफूर - 4 टिकिया
9. देसी घी -रत्नदीप तथा क्रिया के लिए थोड़ा
10. दीप और दीया - एक एक
11. तेल - दीपक के लिए
12. रूई - बत्ती के लिये
13. दियासिलाई - एक डिब्बा
14. सिंदूर - एक छोटा पैकेट
15. केसर - शिवजी के तिलक के लिए या चंदन का टीका
16 मौली - एक या दो गुच्छियां
17. दूध - आधा लिटर
18. दही - एक कव्वल छोटा
19 तिल - 100 ग्राम
20 गुगल धूप - 100 ग्राम, (पूजा के दौरान जलते कोयलों में डालते रहना।)
21. बेर सर्षप - 4 रू0
22. फूलशाली (खील/लाई) - 10 ग्राम
23. जौ - 25 ग्राम
24. शहद - थोड़ा
25. सर्वौषधी थोड़ा सा
26. नैवेद्य के लिये - बादाम गिरी, काजू, इलायची, नारियल, किशमिश (आवश्यकतानुसार)
27 ताम्बूल के लिये - (थोडी सब्ज इलायची लौंग, चार पांच थोडी मिसरी)
28. घर का छोटा आईना
29. शक्कर - 10 ग्राम
30. कंद अपनी मर्यादानुसार
31. बब्बर काठ - 5 रू0
32. चांदी के वर्क - 6
33. घास की आरियां - 10
34. चावल का आटा-1 किलो तथा वुस्र-
35. सिंघाड़े का आटा - 1/2 किलो
36. फूल
37. फल केला आदि
38. बेलपत्र
39. फूलमालाएं छोटी - चार
40. जंग - शुभ शकुन के लिये (चावल, नमक और नकदी)
41. अर्घ के लिये चावल -दो कव्वल
42. फूलों का छत्र - 2 कलश और वटुक देव के लिए
43. वैश्वदेव के लिये चंद लकड़ी के टुकड़े
44. अखरोट - कलश तथा वटुक में डालने के लिऐ 1 कि0 बाकी आवश्यकतानुसा
45. अग्निकुण्ड या दो तीन ईंटें

सुविधा के लिए पितृ तर्पण तथा अन्नकणों में काम आने वाली अपने पूर्वजों (पितरों) की नामसूची साथ रखें।

निवेदन

कृपया पूजा आरम्भ करने से पहले पुस्तक को एक बार अवश्य पढें ताकि पूजा करते समय किसी प्रकार की असुविधा न हो।

वटुक भैरव पूजा

(हेरथ)

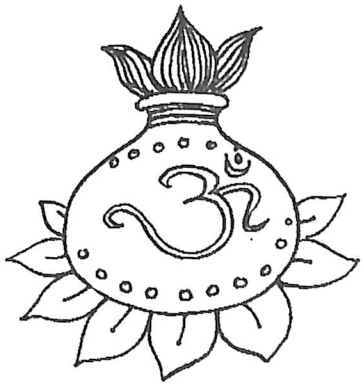

ओंकारनाथ गंजू शास्त्री

बी-128, एस-1, रामप्रस्थ कॉलोनी
गाज़ियाबाद - 201011 (यू.पी.)
दूरभाष : 0120-2641899
मोबाइल : 9910437116

प्रकाशक **अमरनाथ गुर्टू**
बी-128, जी-1, रामप्रस्थ कॉलोनी
गाज़ियाबाद - 201011 (यू.पी.)
दूरभाष : 0120-2640458
E-mail : angurtu@rediffmail.com

इस पुस्तक या इसके किसी भी भाग को
प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुनर्मुद्रित करना निषेधा है।

प्रथम संस्करण - होराष्टम 21 फरवरी 2006

दूसरा परिवर्द्धित संस्करण 2008

तीसरा संशोधित संस्करण 2009

चौथा संस्करण 2010

पांचवा संस्करण 2012

छठा संस्करण 2013

सातवा संस्करण 2015

आठवा संशोधित व परिवर्द्धित
संस्करण 2020

चित्र आवारण सुनिल कुमार हंडू

मुद्रक: **जाफॅरी एण्ड बेल पब्लिशर्स, प्रिंटर्स**
बी - 30, द्वितीय मंजिल, चन्द्रगुप्त कॉम्पलेक्स
सुभाष चौक, विकास मार्ग, दिल्ली -110092
दूरभाष :011 22047667
E-mail : jeoffryandbellpublishers@gmail.com

प्राक्कथन

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।

कलह और छलकपट के इस युग में मोक्ष का एकमात्र साधन भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करना है और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। वटुकपूजा का यह आठवां संस्करण भक्तजनों के करकमलों में समर्पित करते हुये हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

बहुत लम्बे समय से मेरी हार्दिक अभिलाषा रही थी कि 'वटुक पूजा' पर एक ऐसी पुस्तक लिखी जाए जिसमें पूजा-विधि को विस्तारपूर्वक दर्शाया गया हो। ताकि वे सब भक्त लाभान्वित हो जो शिवरात्रि पूजन को सम्पूर्ण विधि अनुसार सम्पन्न करना चाहते हैं।

श्री ओंकार नाथ गंजू , जो एक प्रतिष्ठित विद्वान हैं, का आभारी हूँ जिन्होंने इस मनोकामना को पूरा करने में अपना योगदान दिया। इस पुस्तक में उन्होंने सभी मंत्रों की विस्तृत जानकारी दी है और पूजा पद्धति को सफलतापूर्वक और सार्थक बनाने का प्रयास किया है। उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आशा है कि समस्त कश्मीरी पंडित वर्ग शिवरात्रि के महान पर्व पर श्रद्धाभाव से इस पुस्तक द्वारा मंत्रोच्चारण करके तथा विधि विधान अनुसार पूजन करके लाभान्वित होंगे।

इस संस्करण की विशेषताएं इस प्रकार हैं:-

1. हररात्रि की संक्षिप्त पृष्ठभूमि
2. यथासंभव संधिविच्छेद (क्लिष्ट शब्दों को अलग करना।)
3. अलग-२ मंत्रों से भैरवबलि।
4. अलग अलग मंत्रों से अपने भैरवों का आवाहन तथा पाद्य अर्घ्य देने, तिलक, पुष्प लगाने के समय अलग-2 नामोच्चारण
5. अन्नकणों का चित्र।
6. विसर्जन की पूजा का विधान।
7. ब्रह्म कलश खींचने की आकृति का चित्र स्टेनसिल

आज के इस दौड़धूप के जीवन में कुछ महानुभाव समयाभाव का झूठा बहाना करके इस पूजा को संक्षिप्त करना चाहते हैं। अगर दूसरे सांसारिक या गृहस्थी कार्यों के लिये उनके पास समय की कमी नहीं हैं, अगर नश्वर भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए वे समय निकाल सकते हैं, तो क्या इस पुण्य कार्य के लिये उनके पास समय नहीं है? क्या उस परमसत्ता से बढ़कर हमारे लिये और कोई महत्वपूर्ण कार्य है? जो आधि ार्यों-व्याधियों के नाशक कल्याणकर्त्ता, कष्टहर्ता, करुणावतार तथा कृपासिंधु है।

वर्ष में हमें एक बार ऐसा सुअवसर मिलता है, जब हम सपरिवार भक्तिभाव से उस प्रभु के शरण में जाते हैं, जो भक्तवत्सल एवं दुखहर्ता हैं। यह कैसी मानसिकता है कि मांस, मछली आदि पकवान बनाने तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों पर हम अंकुश नहीं लगा सकते हैं, पर पूजा में कटौती की बात करते हैं जो सर्वथा अनुचित, अवांछनीय तथा अधर्म है। पूजा में किसी प्रकार की संक्षिप्तता महान पाप है।

श्री सुनील कुमार हंडू जो एक महान कुशल कलाकार हैं का आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। उन्होंने इस पूजाविधि के व्यावहारिक पक्ष को समझाने के लिए जिन विभिन्न चित्रों तथा आकृतियों द्वारा इसे सरल, सुबोध बनाकर नया रूप प्रदान किया है वह अति सराहनीय तथा अपने में अभूतपूर्व है। इनकी सहायता से साधरण व्यक्ति भी इस पूजाविधि को सरलतापूर्वक सम्पन्न कर सकता है। अमूर्त भावों, कल्पनाओं तथा चेष्टाओं को मूर्तरूप देकर उन्होंने महान कार्य किया है। उनको पुनः धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

अपनी ओर पुस्तक को सब प्रकार से शुद्ध बनाने की चेष्टा की गई है, तथापि प्रमादवश कुछ अशुद्धियां रह जाना असम्भव नहीं है। ऐसी त्रुटियों के लिए क्षमा मांगते हुए हम पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे हमें सूचित करें, ताकि भविष्य में उनका सुधार किया जा सके।

अन्त में मैं विशेष रूप से श्री विजय कुमार हण्डू, जो इसके मुद्रक हैं और जिन्होंने अपनी कार्यकुशलता से इस पुस्तक को इस रूप में प्रकाशित किया, को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

प्रकाशक

धार्मिक व्यवस्था के अनुकूल

विशुद्ध शिवरात्रि पूजा का प्रकाशन

सम्मानीय ओम्कारनाथ गंजू ; (शास्त्री) जी, कश्मीर की शोध सम्मत शिवरात्रि अथवा वटुकपूजा का प्रकाशन करने जा रहे हैं। तदर्थ उनके प्रति सम्मान व्यक्त करना मेरा परम सौभाग्य बनता है। पाण्डुलिपि परंपरा से आगे आकर ऋषि तुल्य स्व० केशवभटट् शास्त्री के देवनागरी प्रकाशन के उपरान्त कई एक अधूरे और अपूर्ण वटुक पूजा के देवनागरी प्रकाशन छपते ही रहे। पर कांट छांट का यह सिलसिला बना हीं रहा। जिसके फलस्वरूप कश्मीर की यह पांच हजार वर्ष प्राचीन पूजा का वास्तविक भैरव स्वरूप धीरे धीरे धुन्धला ही होता गया। इस पूजा में उपयोग आने वाले मृण्मय उपकरण (terracota-artifects) अर्थात् तप्त माटी का घड़ा, डोल, मृत्तिका वारी, पर्व, धूप ज्वलन और विशेषकर हेरत की पूजा में पूजायोग्य कश्मीरी भाषा का "सनिपोतुल, संस्कृत स्थान पुत्रिका" का एक विशेष महत्व है। पूजा की विधि व्यवस्था से इन मृण्मय उपकरणों को कभी भी नकारा नही जा सकता है। सनिपोतुल एक ऐतिहासिक साक्ष्य हड़प्पा की धर्मिक संस्कृति के निकट स्पष्ट तालमेल बिठाता है, जो आज से पाँच हजार वर्ष पुराने युग की धार्मिक परंपरा का स्मरण दिलाता है।

शिवरात्रि का उल्लेख कश्मीर के आगम ग्रन्थों में "हर रात्रि" का ही अधिकांश नामकरण आया है, संभवतः अपभ्रंश के कारण इसका मौलिक नाम चूक गया है। कश्मीर के इस चिरप्राचीन उत्सव का ऐतिहासिक साक्ष्य नीलमतपुराण, देशोपदेश, नर्ममाला, राजतरंगिणी, श्रीकण्ठचरित, जोनराज की राजतरंगिणी एवं कश्मीर के उत्तर मध्यकालीन फारसी ऐतिहासिक ग्रन्थों में भी आया है। अक़बर नामा फारसी ग्रन्थ में भी इस उत्सव का उल्लेख आया है। गौड प(ति, अर्थात् गुरूटू सम्प्रदाय की परंपरा में इसकी पूजा व्यवस्था वैष्णव सम्प्रदाय के अनुकूल होकर भी अन्ततः परंपरा की ओर उन्मुख होती है।

हेरत उत्सव का आरम्भ प्रत्येक वर्ष फाल्गुण कृष्णपक्ष होरा प्रतिपद्य (ओकदोहद्ध) से लेकर चान्द्र पंचाग (Lunar System) तिथि के आधार पर फाल्गुण कृष्णपक्ष द्वादशी या त्रयोदशी की अर्धरात्रि को पूजा का आयोजन होता है। ईसा की सोलहवीं शती के पण्डित नन्दलाल रैणा ने अपने प्रशस्त ग्रन्थ "शिवरात्रि निर्णय" में इस पूजा के विविध सम्प्रदाय-परक पद्धतियों पर प्रकाश डाला हैं इस पूजा पद्धति में "अकुल-सम्प्रदाय" और "कुल-सम्प्रदाय" का भी विशेष महत्व रहा है। यही कारण है, कुछ परिवारों में पूजा पुरूष करता है और कुछ परिवारों में पूजा करने का अधिकार मात्र गृहिणी को है। तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि शिवरात्रि का उत्सव सनातन कश्मीर के शाक्त शैव संगम का अगाध सागर है।

श्री ओम्कारनाथ शास्त्री जी ने अथक और अपार शोध, प्रयास और परिश्रम करके भूली बिसरी कश्मीर की सांस्कृतिक शिवरात्रि पूजा को एक बार, फिर प्राचीन धार्मिक इतिहास के सन्दर्भ में सशक्त रूप से सजीव किया है। महामाहेश्वराचार्य श्रीराम श्री गंजू जी को इस प्रकार की धार्मिक संस्कृति के उद्धार एवं सुधार के लिए उत्साहित सदा ही बना रखें। एक बार पुनः श्री ओम्कारनाथ को प्रस्तुत प्रयत्न के लिए धन्यवाद देना अपना ही अहोभाग्य समझता हूँ।

विनीतकः
डॉ० त्रिलोकीनाथ गंजू
82, सत्थू पाईन, श्रीनगर, कश्मीर
पिन 190001

कुछ ज्ञातव्य बातें

1. शिवरात्री का पूजन-यजन रात्रि के समय ही किया जाता है। भगवान शिव तमोगुण प्रधान संहार के देवता है, अतः तमोमयी रात्रि से उनका अधिक स्नेह है। रात्रि संहारकाल का प्रतिनिधित्व करती है। कृष्णपक्ष की त्रयोदशी में रात्रिकालीन प्रकाश का स्त्रोत चन्द्रमा भी पूर्णरूप से क्षीण होता है और जीवों के भीतर तामसी प्रवृत्तियाँ कृष्णपक्ष की रात में बढ़ती जाती हैं। अतः रात्रि का समय भगवान के शरण जाना उपयुक्त समझा जाता है ताकि हमारे अंदर निहित तामसी प्रवृत्तियाँ नष्ट हों।
2. तिलक लगाने से 'आज्ञाचक्र' (दोनो भौहों के बीच का स्थान) जागृत होता है। ज्ञान तन्तुओं को शीतलता मिलती है। यह सम्मान सूचक भी है। तिलक लगाने से साधुता एवं धार्मिकता का आभास होता है।
3. कुशा कुचालक (नान-कन्डक्टर) होती है। इसलिये पूजा-पाठ, जप-होम आदि में कुशा का आसन बिछाया जाता है। जिससे हमारी संचित शक्ति को पृथ्वी अपनी ओर न खींचे। अनामिका में पवित्री धारण करने का अभिप्राय भी यही है कि कहीं हमारा हाथ बार-बार इधर-उधर करने से भूमि को न छुये। यदि भूल से हाथ पृथ्वी पर पड़ जाये तो भूमि से कुशा का ही स्पर्श होगा। इसके अतिरिक्त पवित्री मन की चंचलता को दूर करती है। कुशा राक्षसों से श्राद्ध की रक्षा करती है।
4. प्राणायाम करते समय मिले हुए आक्सीजन से फेफड़ों में पहुंचा हुआ अशुद्ध रक्त शुद्ध होता है। इस शुद्ध रक्त का हृदय पंपिंग क्रिया द्वारा शरीर में संचार कर देता है।
5. मौली एक प्रकार का रक्षा सूत्र है। इसके बाँधने से त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु, महेश और तीनों महादेवियों-महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली की कृपा प्राप्त होती है। त्रिदोष वात, पित्त, कफ का शमन होता हैं।
6. देवी के मन्दिर की एक बार, सूर्य के मन्दिर की सात बार, गणेश के मन्दिर की तीन बार, विष्णु के मन्दिर की चार बार और शंकर के मंदिर की आधी बार परिक्रमा करनी चाहिए।
7. **तीन प्रकार के आहार**

1. ***सतोगुणी आहार***- आयु, सत्वगुण, बल, आरोग्य सुख और प्रसन्नता बढ़ाने वाले, हृदय को शक्ति देने वाले, रसयुक्त तथा चिकने आहार सात्विक मनुष्य को प्रिय लगते हैं।
2. ***रजोगुण आहार*** - अति कड़वे, खट्टे, अति नमकीन, अति गरम, अति तीखे, रूखे और अति दाह कारक। ऐसे आहार दुख शोक और रोगों को देने वाले हैं।
3. ***तमोगुणी आहार*** - जो भोजन सड़ा हुआ, रसरहित, दुर्गन्धित बासी और झूठा हो, जो महान् अपवित्र भी हो। ऐसा तामस आहार मनुष्य को प्रिय लगता है।

प्रस्तावना

शिवरात्रि एक महान पर्व

जीवः शिवः शिवो जीवः स जीवः केवलः शिवः।
पाशबद्धः स्मृतो जीवः पाशमुक्तः सदाशिवः। **(कुलार्णव तन्त्रा)**

***(अर्थः** जीवात्मा ही ज्ञान प्राप्त करके शिव रूप परमात्मा है और शिव ही अपनी स्वतंत्रा इच्छा से जीवभाव प्राप्त करता है। शिव और जीव में कोई भेद नहीं है। अज्ञानरूप बन्धन में पड़कर इसे जीव कहा जाता है, पर जब बन्धनों से छूट जाये तो इसे ही शिव के नाम से पुकारा जाता है।)*

शिवरात्रि, हर रात्रि, हेरथ अथवा भैरवयाग कश्मीरी पंड़ित समाज का एक महान पर्व है। शिवरात्रि तान्त्रिक व्रत है। इस व्रत का नाम तंत्र-शास्त्रों में हररात्रि, हेरथ या भैरवोत्सव पाया जाता है । परन्तु कश्मीर में यह व्रत शिवरात्रि नाम से प्रसिद्ध है। इस व्रत को भैरवोत्सव इसलिये कहा गया है। क्योंकि इस दिन भैरव-भैरवी, वटुक और रमण नामक देवीपुत्रों की पूजा की जाती है।

कहते हैं कि एक बार भगवान् भैरव भट्टारक ने क्रोध में आकर अपने वास्तविक चिद्रूप को तिरोहित (छिपाना) किया और फिर प्रदोष काल से रात्रि तक शून्याकाश में ज्वालालिंग के रूप में भक्तों का उद्धार करने हेतु उसको प्रकट किया। अतः इस रात्रि का हररात्रि नाम है।

एक और मान्यता यह है कि भगवान् शिव ने अपने स्वातन्त्रय से अपने वास्तविक रूप को छिपाने हेतु द्वैतभावना की मोहरात्रि (कालरात्रि) का सर्जन किया और इस जीवभाव की कालीरात का संहार भी अपने ही प्रकाश के विस्तार से कर डाला, अतः यह शिवरात्रि है।

तंत्रशास्त्रों में इस पर्व के महत्व के विषय में बहुत कुछ वर्णन मिलता है और तान्त्रिक साधना पद्धति में भी अनेक विधि-विधानों का प्रचलन था। तन्त्रोक्त क्रियाओं को याग कहते थे। परन्तु कालान्तर में उन यागों के ज्ञाता साधकों का धीरे-धीरे हास होने लगा और तत्कालीन सिद्धों ने इन यागों को संक्षिप्त बनाकर हररात्रि के रूप में विकसित कर दिया।

इस पर्व पर पूजे जाने वाले पात्रों का विवरणः

ब्रह्मकलश - यह गणेश की मूर्ति है इसके खानों मे गणेश कुमार, श्री, सरस्वती, लक्ष्मी, विश्वकर्मा, ब्रह्मध्रुव और अगस्त्य देव हैं।

गागर - यह वटुक भैरव का स्वरूप है।

रामगुड़

यह रमण भैरव का रूप है।

डुल

यह वटुकनाथ भैरव के सहचर पार्षदों, देवियों और दूसरे सारे भूतगणों का प्रतिनिधित्व करता है। इसी कारण इसमें अन्न इत्यादि की बलि अर्पित की जाती है।

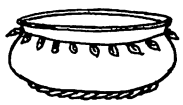

ऋषि डुलजि

यह ऋषियों का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसमें वैष्णव बलि दी जाती है।

योगिनियां

ये योगिनियों का प्रतीक हैं

क्षेत्रपाल दो

उस शक्ति के प्रतीक हैं, जो प्रकाश और आनंद के खेत की रखवाली करती हैं तथा सम्बन्धित योगिनी समूह का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। वागुर, मचवारी, घड़ा, सकोरा इत्यादि पात्र बारह ज्वाला लिंग पीठों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह पर्व फाल्गुण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से आरम्भ होकर अमावसी तक पूरे पन्द्रह दिन किसी न किसी रूप में मनाया जाता है।

प्रतिपदा (हुरि ओकदोह)	:	से घर की लिपाई, पुताई, धुलाई का आरंभ
द्वतीया, तृतीया	:	बर्तनों की शुद्धि एवं मूंग, माष आदि के पापड़ तेल में बनाना।
चतुर्थी-पंचमी	:	मसालों का पीसना
षष्ठी-सप्तमी	:	भैरवयाग के लिये घी में बड़ियाँ, लूचियां, मछलियां बनाना क्षेत्रेशो की बलि देना।

होरा अष्टमी	:	घर को सुगंधित द्रव्यों से लेपन, देवालयों में जाकर रातभर जागरण करना।
नवमी	:	भैरव पूजा के लिये बर्तन लाना। इसी दिन से विवाहित महिला वर्ग का पितृगृह (माल्युन) जाना।
दशमी (द्यार दहम)	:	द्यार का अर्थ धन है इस दिन या अगले दिन उनका कांगड़ी, नमक, अतगथ तथा कोई उपहार साथ लाकर ससुराल लौटना।
एकादश (गाड़ काह)	:	इस दिन विघ्नों को दूर करने वाले कश्मीर के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले ग्यारह भैरवों को संतुष्ट करने के लिये मीन, (मछली) मांस की बलि अर्पित की जाती थी।

<u>यह ग्यारह भैरव इस प्रकार हैं -</u>

1. **वटुकनाथाय**
2. **भूतबलेभ्यः**
3. **बेतालराजाय**
4. **बहुखातकेश्वराय**
5. **स्थानक्षेत्रपालाय**
6. **मंगलराजाय**
7. **योगिनी बलेभ्यः**
8. **विश्वक्सेनाय**
9. **जयक्सेनाय**
10. **तेजाय**
11. **चण्डाय**

द्वादशी (वागरिबाह) : इस दिन क्षेत्रेश पूजा करके वटुक भैरव की पूजा का संकल्प किया जाता है कि "मैं कल त्रयोदशी के दिन वटुक भैरव की पूजा करूँ" तथा वागुर (एक छोटे आकार का पात्र) में अखरोट डालकर पूजा की जाती हैं।

शिवरात्रि (हेरत त्रोवाह) इस दिन वटुकभैरव की यथाविधि पूजा की जाती है। (रत्नलकाचार्य लिखित हरिहर वासर विनोद से)

चतुर्दशी : शिवरात्रि के समापन की प्रसन्नता में अपने बन्धु-बान्धवों के घर जाकर उनको बधाई देना और अपने निकटतम परिवारजनों में हेरथ खर्च भी बांटना।

अमावसी (डूनि मावस) : इस दिन अखरोटों की पूजा की जाती है और (तुमल चोच्य डूनि गोज चावल के आटे की रोटी और अखरोट की गिरी का प्रसाद खाया जाता है।) इसी दिन वटुक देवता तथा उसके अन्य सहचरों का यथाविधि विसर्जन भी किया जाता वटुक परमोजुन कहते हैं। इसके पश्चात् अखरोटों का प्रसाद रोटियों समेत बन्धु-बान्धवों में वितरण किया जाता है। यह सारी प्रक्रिया तैलाष्टमी (तील अठम) से पहले ही समाप्त होनी चाहिए।

अब समय के परिवर्तन के साथ साथ इन रीतियों तथा परम्पराओं में भी सिकुड़न आने लगी, फिर भी श्रद्धा तथा भक्तिभाव से यह उत्सव मनाया जाता है।

शिवरात्रि मनाने के सम्बन्ध में स्व० पं० शिवभट्ट वंगू अपनी पुस्तक 'शिवरात्रि निरूपण' में लिखते हैं कि एक बार आनंदमुद्रा में बैठे हुए भगवान शिव को शिवगणों के साथ मिलकर क्रीडा करने की इच्छा हुई। इच्छा के उत्पन्न होने के साथ ही सारे शिवगण सेवा में उपस्थित होकर आदेश की प्रतीक्षा में खडे हो गए। महादेव ने अपने परमाशक्ति (पार्वती) का समाधि में ध्यान किया और देखा कि वह हिमालय के सुन्दरताल नामक प्रसिद्ध उपवन में अपने से उत्पन्न की हुई अनेक देवियों के साथ नाना प्रकार के पदार्थों तथा नाना पकवान पूड़ियां, लुच्चियां, वट बर्बर (वरि और बर्बर) आदि तैयार करने में लगी थीं। दूसरी देवियां वागरू, घडे, सकोरे, सञ्जिपुत्तल, नारी, घघरियां बना रही थी और कई लिपाई-पुताई करने में व्यस्त थीं।

समाधि में यह सब देखकर महादेव ने पंचमुख, अष्टादश भुजयुक्त और पन्द्रह नेत्रों वाले स्वच्छन्दभैरव का रूप धारण किया और उनके सामने प्रकट हुए। इस भयंकर रूप को देखकर योगिनियां सहम गई और इधर उधर भाग जाने का यत्न करने लगीं। महामाया ने क्रोधित होकर एक जलकुम्भ में दृष्टि डाली और उस में से वटुक भैरव आयुधों सहित निकल आया। वटुक को स्वच्छन्द भैरव के निवारण में असमर्थ जानकर महामाया ने दूसरे जलकुम्भ में दृष्टि डाली और वहां से सब आयुधों सहित सुंदर आकृति वाला रमण नामक एक और गण उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार महामाया ने असंख्य गणों को उत्पन्न कर भयंकर आकृति वाले महादेव का निवारण करने के लिये उन्हें आज्ञा दी। यह सब गण स्वच्छन्दनाथ शिव पर आक्रमण करने के लिये उद्यत हुए, परन्तु शिव अन्तर्ध्यान हुए। सारे परमाशक्ति के पास आ गए। देवी ने वटुक और रमण को वरदान दिया जिस कारण तुम मेरी दृष्टि से वटु (ब्रह्मचारी) के रूप में उत्पन्न हुए, अतः तुम्हारा नाम 'वटुक' होगा। रमण राम से कहा - हे पुत्र। तुम मेरी शुभ दृष्टि से उत्पन्न हुए हो, तेरा रूप दिव्य है तुझे देखकर मन प्रसन्न होता है। अतः तुम्हारा नाम रमण होगा क्योंकि तेरे दिव्य तेज में योगी रमण करते हैं, वटुक के बाद तेरी पूजा होगी। देवी ने दोनों को अपनी सेना का अधिपति बनाया और फाल्गुण कृष्ण पक्ष त्रायोदशी (सारी कामनाओं को पूर्ण करने वाली तिथि) की रात्रि को भक्तों द्वारा पूजे जाने का वरदान दिया।

फिर देवी ने सारे तैयार किये पकवान आदि गणों को अर्पण करने की आज्ञा दी इसी दिन सायं प्रदोषकाल से रात्रि के अन्त तक महादेव वटुक आदि का घमंड दूर करने के लिए आकाश में ज्वालालिंग के रूप में प्रकट हुए। वह दिव्य तेज का इतना महान पुञ्ज था कि किसी ने भी न उसका आदि पाया और न अन्त। सब उस दिव्य तेज के शरण में गए और उसकी स्तुति करने लगे। इस दिन फाल्गुण कृष्ण पक्ष त्रयोदशी थी। इसी दिन भगवान् शिव ज्वालारूप में प्रकट हुए और अर्धरात्रि के अनन्तर शान्त होने लगे।

प्रदोष (सूर्यास्त के अनंतर का समय) काल में ज्वालालिंग के प्रकट होने से कुछ लोग प्रदोष काल को पूजाकाल मानते हैं और कुछ प्रदोष काल में महादेव की ज्वालामूर्ति भयानक होने से उस काल को पूजाकाल नहीं मानते हैं, अपितु अर्धरात्रि को महादेव के ज्वालारूप के शान्त होने पर अर्धरात्रि को ही पूजाकाल मानते हैं।

महादेव आशुतोष सब का कल्याण करें, तथा हररात्रि भक्तजनों के लिये मंगलमय और शुभफलदायक हो इसी कामना के साथ।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।

ओंकारनाथ गंजू, शास्त्री

पूजा सामग्री

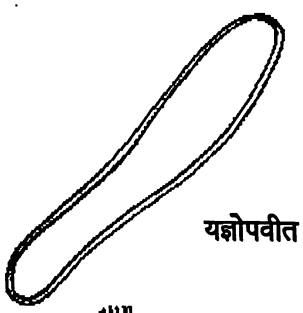
यज्ञोपवीत

कुशा

जौ

विष्टर

चावल का आटा

धूप

पवित्र

काफूर

दीप

दीया

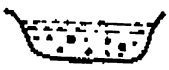
तेल

सिंदूर और चन्दन/केसर का टीका

दूध

दही

तिल

शहद

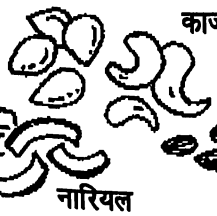
काजू

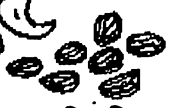
किशमिश

आईना

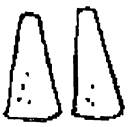
कंद

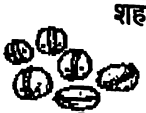
अखरोट

इलायची

नारियल

शक्कर

चांदी का वर्क

घास की आरी

सिंघाडे का आटा

फूल

केला

सेब

बेल पत्र

जंग

लकड़ी

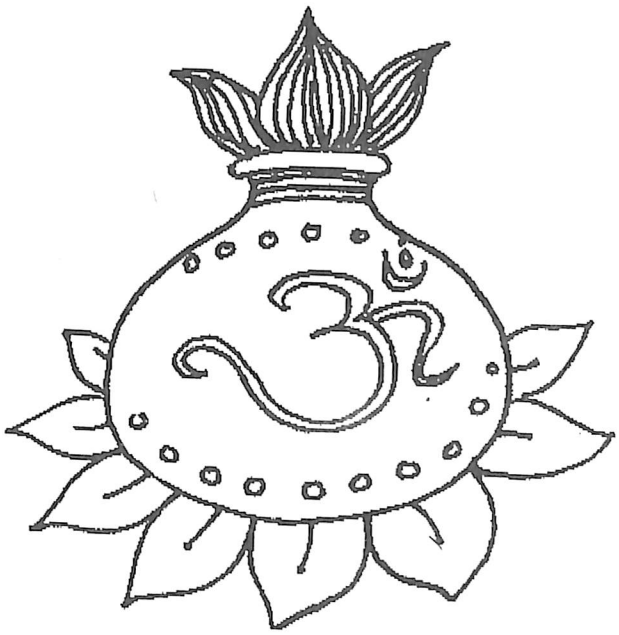

कलश पूजा

आरम्भ

कलश पूजा आरम्भ

सब से प्रथम पूजक (यजमान) पूर्व दिशा की ओर 'पूजा मण्डप' को सजावे। पूजा मण्डप पर पात्रों को रखने का अनुक्रम इस प्रकार होना चाहिए।

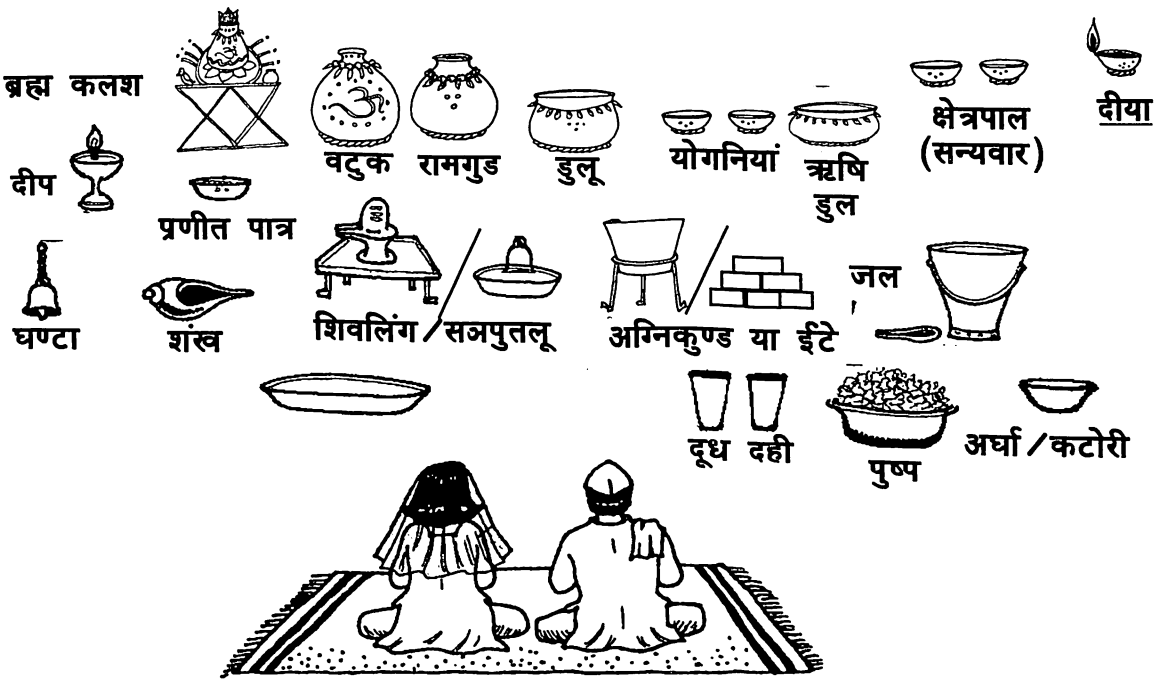

कलश की विधि :-

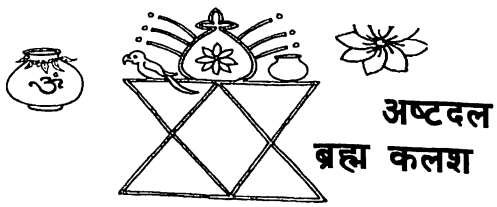

ईशान कोण (अपने बायें तरफ के ऊपरले कोण) में 'ब्रह्म कलश' चूने से बनावे। उसके अष्टदल कमल पर कलश पात्र को घास की आरी पर रखें जिस में दर्भ का विष्टुर हो, (दर्भ के अभाव मे द्रमुन का बना विष्टुर डाले) कलश पात्र जल और अखरोट से पूर्ण हो। वटुक आदि दूसरे पात्रों

में भी जल तथा अखरोट डालकर, सिन्दूर का तिलक लगा कर, मौली बांध कर, चांदी के वर्के चढ़ाकर, घास की आरियों पर रखें। इसी के साथ रामगुड, क्षेत्रापाल आदि अपने कुल परम्परा के अनुसार जो रखना हो, रखें।

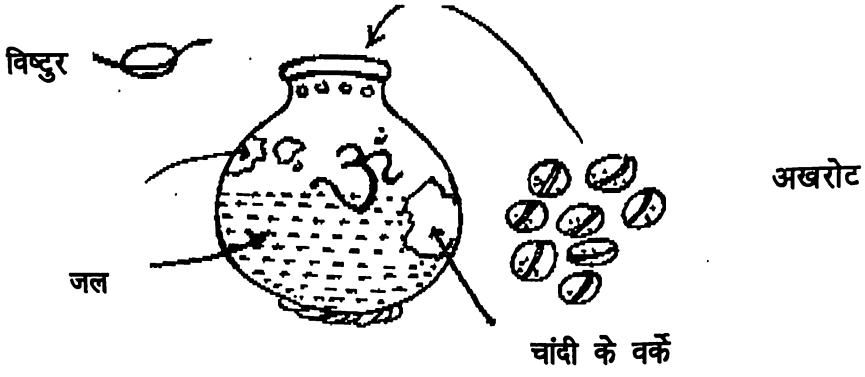

सारी सामग्री को अपने अपने स्थान पर रखकर धूप, दीप और अगरबत्ती जलाए और फिर भक्तिभाव से पूजा आरम्भ करें।

कलश पर अर्घपुष्प चढ़ाते रहें

ॐकारो यस्य मूलं क्रम पद जठर च्छन्द विस्तीर्ण शाखा,
ऋक् पत्रं साम पुष्पं यजु रुचित फलः स्यात् अथर्वः प्रतिष्ठा।
यज्ञच्छाया सुशीतो द्विज गण मधुपैः गीयते यस्य नित्यं,
शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरित भयहरः पातु नो वेदवृक्षः।।
मूला धारात् हुतवह कला मिश्रितं भूर भुवः स्वः,

ब्रह्म स्थानात् परम गहनात् घी तत् सवितुः वरेण्यम् ।
भर्गो देवः शशि कल मयी धीमही त्येक रूपं,
धियो यो नः पिबतं अमृतं चोदयात् नः परं तत्।।
मुक्ता विद्रुम हेम नील धवल च्छायैः मुखैः त्रीक्षणैः,
युक्ताम् इन्दु निबद्ध रत्न मुकुटाम् तत्त्वात्म वर्णात् भिकाम्।
गायत्रि वरदा भयाङ्.कुश करां शूलं कपालं गुणं,
शंखं चक्रं अथारविन्द युगलं हस्तैः वहन्तीं भजे।।
आयातु वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्म वादिनी।
गायत्रि छन्दसां मातः ब्रह्मयोने नमोस्तु ते।। 3 बार पढ़िये
भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं, भद्रं वदेम श्रृणुयाम भद्रम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम्, अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः।।
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति सूरयः, दिवीव चक्षुर् आततम्।
तत् विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते, विष्णोः यत् परमं पदम्।।
ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ सावित्र्यै नमः ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ सरस्वत्यै नमः ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

क्षेत्रपालों में केवल अर्घ डालते रहें

क्षेत्रपाल

(अश्वमेधे घोराणाम् आर्षम्) ॐद्रष्टे नमः उपद्रष्टे नमः अनुद्रष्टे नमः ख्यात्रे नमः उपख्यात्रे नमः श्रृण्वते नमः उप श्रृण्वते नमः सते नमः असते नमः जाताय नमः जनिष्यमानाय नमः भूताय नमः भविष्यते नमः चक्षुषे नमः श्रोत्रय नमः तपसे नमः। भूतं भव्यं भविष्यत् वषट् स्वाहा नमः ऋक्सामं यजुर् वषट् स्वाहा, नमो गायत्री त्रिष्टुब्जगती वषट् स्वाहा, नमः पृथिवीः अन्तरिक्षं द्यौर् वषट् स्वाहा, नमो अन्नं कृषिः वृष्टिर् वषट् स्वाहा, नमः पिता पुत्रः पौत्रौ वषट् स्वाहा, नमः प्राणो व्यानो अपानो वषट् स्वाहा, नमो भूर् भुवः स्वः वषट् स्वाहा। यो विश्वचक्षुः उत विश्वतोमुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस् पात्। संबाहुभ्यां धमते संपत्रतैः द्यावा पृथिवी जनयन् देव एकः।।

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्म वर्चस्वी जायताम्,
अस्मिन् राष्ट्रे राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर् वोढा अनड्वान्, आशुः सप्तिर् जिष्णु रथेष्ठाः,
पुरन्धिर् योषा सभेयो युवा अस्य यजमानस्य वीरो जायतां।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवतीर् न ओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

किसी कटोरी में तिल, जौ, पानी और विष्टर डालें और उसमें इन मंत्रो से तीन_बार फूल डालें

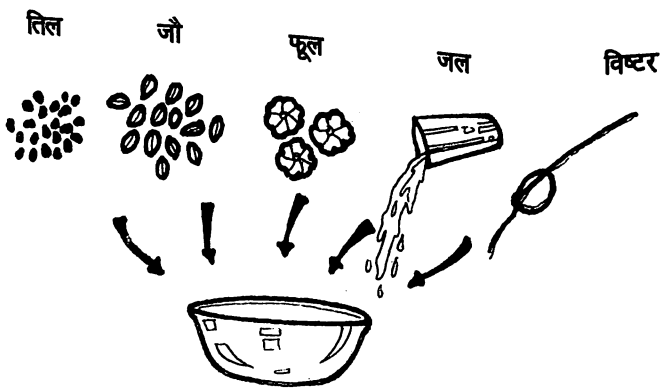

पहली बार -

संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः।

दूसरी बार -

संसृष्टास् तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।

तीसरी बार -

संय्या वः प्रियास् तन्वः संप्रिया हृदयानि वः।
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास् तन्वो मम।।

इसी पात्र के विष्टुर से वटुक, कलश तथा अन्य पात्रों को पानी की छीटें दीजिए। इसे जीवादान कहते है।

1. **अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन् दत्तां तेन जीव,**
2. **मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन् दत्तां तेन जीव,**
3. **बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणन् ददातु तेन जीव।**

कलश की चार दिशाओं में अर्घ तिल इकट्ठा मिलाकर डालिए

पूर्व (पहले)

उत्तर (चौथा)

दक्षिण (दूसरा)

पश्चिम (तीसरा)

पहले पूर्व दिशा में

ये देवाः पुरः सदोअग्नि नेत्र रक्षोहणः ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

फिर दक्षिण दिशा में

ये देवाः दक्षिणात् सदो यमनेत्रा रक्षोहणः ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

फिर पश्चिम दिशा में

ये देवाः पश्चात् सदो मरुनेत्र रक्षोहणः ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

अब उत्तर में

ये देवा उत्तरात् सदो मित्रवरुण नेत्रा रक्षोहणः ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।।

कलश देवता पर तिलक लगाते रहिए

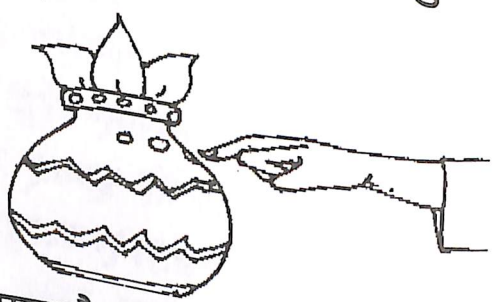

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय,फाल्गुणे शक्तितसहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिम्यः पितृगणदेवाभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै,

अब वटुक, रामगुड, डुलू आदि को भी तिलक लगाए

पूर्वे ॐ ह्री श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथ देवताभ्यः, समालभनं गन्धो नमः।

फिर श्रेत्रपालों को

तेजाय, चण्डय, समालभनं गन्धो नमः।

हाथ धोकर इसी प्रकार कलश देव पर अर्घपुष्प चढ़ाते रहिए

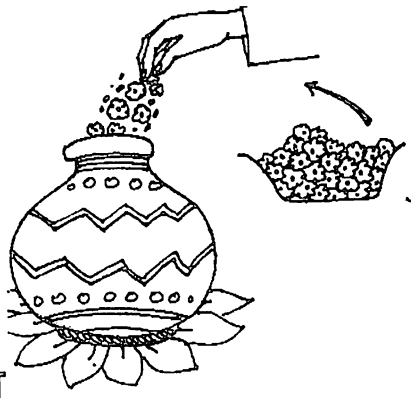

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै,
लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये,
ब्रह्मणे, कलश देवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वर
देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय,
ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे शक्तिसहिताय
चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविंदाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय,
अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगण देवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै,
शिवरात्र्यै,

वटुक, रामगुड, डुलू आदि को अर्घपुष्प लगायें

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथ देवताभ्यः,अर्घो नमः पुष्पं नमः।

फिर क्षेत्रपालों को केवल अर्घ डालिए

तेजाय, चण्डाय अर्घो नमः पुष्पं नमः।

कलश पर अर्घपुष्प चढ़ाते रहिए

1. रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूतनिवेशिनीम्।
भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्।।

2. संवेशिनीं संयमनीं ग्रह नक्षत्रमालिनीम्
प्रपन्नोहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि नमः।।

3. यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य ओषधीषु यो वनस् पतिषु।
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।।

4. क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि।
गाम् अश्वं पोषयित्वा स नो मृडाती दृशे।।

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय नमः, आग्नेये भूतबलेभ्यः नमः, दक्षिणे अग्निवेताल राजाय नमः, नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय नमः, पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालाय नमः, वायवे मंगलराजाय नमः, उत्तरे योगिनी बलेभ्यो नमः, ईशाने विश्वक् सेनाय नमः, ऊर्ध्वे जयक्सेनाय नमः, पाताले तेजाय नमः, मध्ये चण्डाय नमः, समस्त शिवरात्रि याग देवताभ्यः नमः, भवाय देवाय नमः, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय नमः, अभयङ्करी देव्यै नमः, क्षेमङ्करी भगवत्यै नमः, सर्वशत्रुघातिन्यै नमः, इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय नमः।

ऐन्द्राग्नम् वर्म बहुलम् यद् उग्रम् नाति विध्यन्ति शूराः, तत् नः त्रायताम् तन् वः सर्वतो महत् आयुष् मन्तो जराम् उपगच्छेम जीवाः

अब किसी छोटे पात्र में थोड़ा तिल, चावल, दही, शक्कर, मिलाकर इस पात्र को कलश के समाने हाथ से थामकर उस को नैवेद्य मानकर समर्पण करें

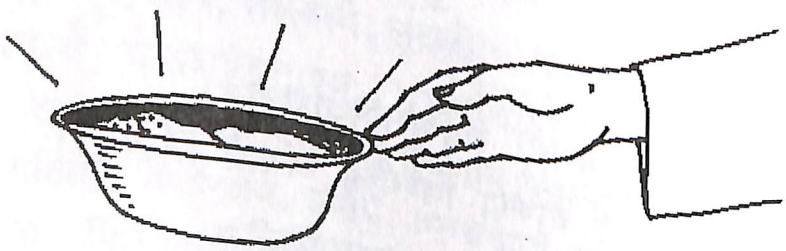

सावित्रणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसविऽश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम् आदधे। महागणपतये, कुमाराय, भ्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलश देवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतय नारायणाय, फाल्गुणे शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविंदाय,

दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगण देवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथ भैरवेभ्यः, भवाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, तेजाय, चण्डाय, समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यः, इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय, तिल तंडुल मात्रं, दधि मधुमिश्रं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

कलश पर फिर अर्घपुष्प चढ़ाते रहिए

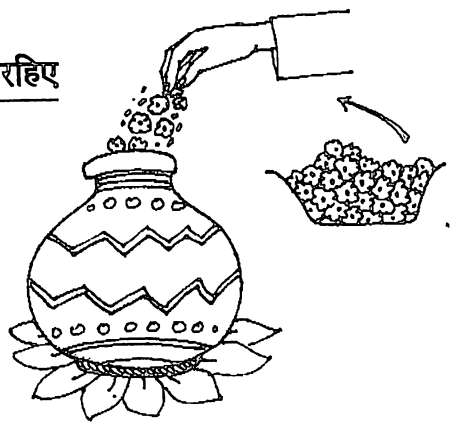

1. हिरण्यगर्भः सम वर्ततागने भूतस्य जातः पतिर् एक आसीत्।
   स दाधार पृथिवीं द्याम् उतेमाम् कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

2. यः प्राणतो निमिषत च राजा पतिः विश्वस्य जगतो बभूव।
   ईशेयो अस्य द्विपदः चतुष् पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

3. य ओजदा बलदा यस्य विश्व उपासते हविषा यस्य देवाः।
   यस्य छाया अमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय विधेम।।

4. य इमे द्यावा पृथिवी तस् त भाने आधारयत् रोधसी रेजमाने।
   यस्मिन् अधि विततः सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

5. यस्येमे विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यस्य रसया सहाहुः।
   दिशो यस्य प्रदिशः पंचदेवी कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

6. आपो ह यन् महती विश्वम् आयुः गर्भम् दधाना जनयन्तीर् अग्निम्।
ततो देवानां निरवर्ततासुः एकः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

7. आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिः धाता दधातु सुमनस्य मानः।
संवत्सर ऋतुभिः चा क्लृ पानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिः दधातु।।

8. अर्चन्तस् त्वा हवामहे अर्चन्तः समिधीमहि।
अग्नेर् अर्चत ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रिय मेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णम् अर्चत अर्चत अर्चत।।

(यहां कलश पूजा समाप्त होती है)

वटुक पूजा विधिः

अब वटुकपूजा आरम्भ होती है। सर्वप्रथम यज्ञोपवीत गायत्रीमंत्रा से धो लें। साथ ही जंग का चावल तैयार रखें

ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ सावित्र्यै नमः ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ सरस्वत्यै नमः ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

फिर यज्ञोपवीत धारण करें, साथ ही (शुगन के लिए) जंग का चावल लगवाएं

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यम् अग्रयम् प्रति मुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलम् अस्तु तेजः।
यज्ञोपवीतं असि यज्ञस्यत्वा उपवीतेन उपनह्यामि।।

पुराना यज्ञोपवीत इस मन्त्र से निकालें

ॐ एतावत् दिनपर्यन्त ब्रह्म त्वं धारिंत माया।
जीर्णत्वात् ते परित्यागो, परित्यागो, गच्छ सूत्र यथा सुरनम्।।

भद्रपीठ पर या किसी बर्तन में सन्य पुतल्लू अथवा शिवलिंग को रखें।
पिफर कटोरी में विष्टर रखकर उससे निर्माल्यपात्रा में पानी डालते जाइए

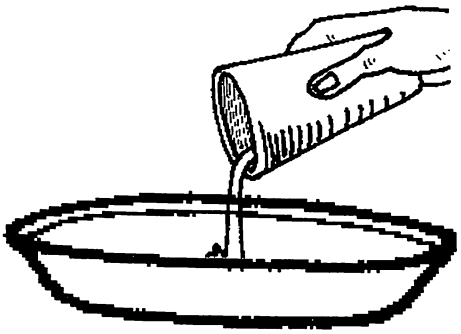

अस्य श्री आसनशोधन मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनशोधने विनियोगः।

अब न्यास जैसे चित्र में दिखाया गया हैं, करें

सिर का स्पर्श करे

मेरूपृष्ठ ऋषये नमः शिरसि।

मुख का स्पर्श करें

सुतलं छन्दसे नमः मुखे।

हृदय का स्पर्श करें

कूर्मो देवतायै नमः हृदि।

सब अंगों का स्पर्श कारें

आसन शोधने विनियोगाय
नमः सर्वाङ्गेषु।

दर्भ के दो तिनकों या फूल से भूमि को आसन दीजिए (यानि भूमि पर रखें)

ध्रुवा द्यौः ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वं इदं जगत् ध्रुवोराजा विशामसि।।

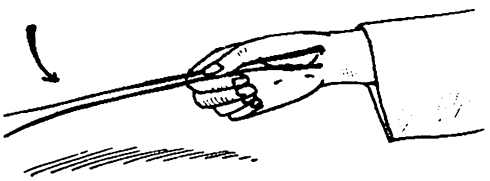

पृथ्वी को तिलक और अर्घपुष्प लगाएं

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः
अर्घो नमः पुष्पं नमः।

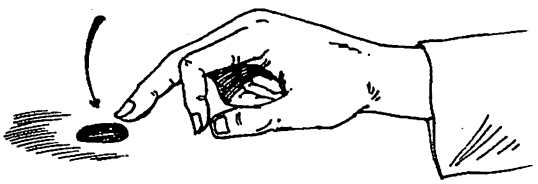

हाथ धोकर पृथ्वी को नमस्कार करके अपने आसन पर
विष्टर से पानी की छींटे दीजिए

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

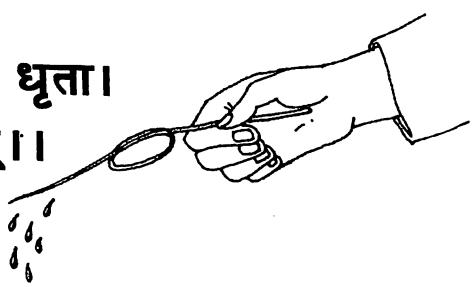

अब वटुकनाथ भैरव का मन में
ध्यान करके हाथ जोड़कर रहें

1. शुक्लाम्बर धरं विष्णुं, शशिवर्णं चतुर् भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्, सर्व विध्नोप शान्तये।।

2. अभिप्रेतार्थ सिद्धय्र्थं, पूजितो यः सुरैर् अपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, श्री गणाधिपतये नमः।।

3. कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसार सारं, भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।।

4. देवि प्रपन्नार्तिहरि प्रसीद, प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वम्, त्वं ईश्वरी देवि चराचरस्य।।

5. गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुसाक्षात् महेश्वरः।
गुरुः एव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

6. अखंड मंडलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

7. गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, परमेष्टिने गुरवे नमः,
परमाचार्याय नमः, आद्य सिद्धेभ्यो नमः।।

न्यास

पुस्तक में दर्शाए हुए चित्रों के अनुसार न्यास करें

नाभिस्थान को स्पर्श करें

अ - नाभौ

हृदय को स्पर्श करें

उ - हृदि

सिर को स्पर्श करें

म - शिरसि

दोनो हाथों से अगूंठों को आपस में मिलायें

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

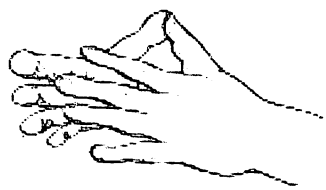

दोनों हाथों की तर्जनियों को आपस में मिलाए

न - तर्जनीभ्यां नमः

दोनों हाथों की मध्यमाओं को आपस में मिलाए

म - मध्यमाभ्यां नमः

दोनों हाथों की अनामिकाओं को आपस में मिलाए

शि - अनामिकाभ्यां नमः

दोनों हाथों की कनिष्ठिकाओं को आपस में मिलाए

वा - कनिष्ठिकाभ्यां नमः

दोनों हाथों के तले और पृष्ठभाग को मिलाएं

य - करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः

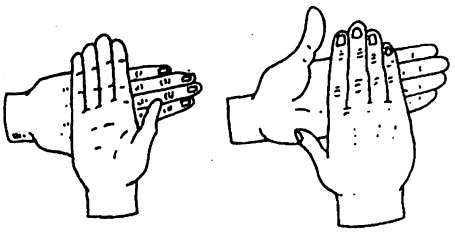

अब षट् अंगन्यास कीजिए

हृदय का स्पर्श करें

ॐ - हृदयाय नमः

सिर का स्पर्श करें

न - शिरसि स्वाहा

चोटी का स्पर्श करें

म - शिखायै वौषट्

दाहिने हाथ से बायें कन्धे का
और बायें हाथ से दायें कन्धे का स्पर्श करें

शि - कवचाय हुँ

आँखों का स्पर्श करें

वा-नेत्राभ्यां वौषट्

हाथ से चुटकी बजावे

य - अस्त्राय फट्

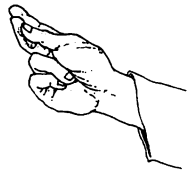

फिर एक बार षट् अंगन्यास करें

हृदय का स्पर्श करें

यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः

सिर का स्पर्श करें

यो अप्सु य ओषधीषु-शिरसे स्वाहा

चोटी का स्पर्श करें

यो वनस्पतिषु शिखायै वौषट्

दाहिने हाथ से बायें कन्धे का
और बायें हाथ से दायें कन्धे का स्पर्श करें

यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश कवचाय हुम्

उंगलियों से आँखों का स्पर्श करें

तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट्

चुटकी बजावे

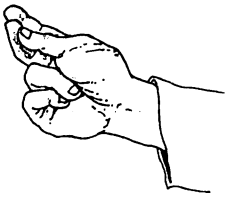

नमो अस्तु देवा - अस्त्राय फट्

अपने दोनों कन्धों के ऊपर से तिल फेंकिए

अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारः, ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

अब प्राणायाम कीजिए

पहली बार गायत्री मंत्र से श्वास को बायें नासापुट से लम्बा खींचते हुए भीतर लीजिए, दूसरी बार श्वास को इसी मंत्र से भीतर बन्द रखें और तीसरी बार इसी मंत्र से दायीं नासापुट से श्वास धीरे धीरे बाहर छोडिए।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यं, ॐ तत् सवितुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योति रसोमृतम् ब्रह्म भूः भुवः स्वरोम्-3

अपने पैरों और मुंह को पानी की छींटे लगाए

तीर्थे स्नेयं तीर्थम् एव, समानानां भवति, मानः
शंस्यो अरुरुषो, धूर्तिः प्राणङ्, मर्त्यस्य
रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।।

दायें हाथ की अनामिका – चौथी उंगली में पवित्र धारण करें

वसोः पवित्रम् असि शतधारं वसूनां पवित्रं असि।
सहस्रधारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि
रायस् पोषेण बहुला भवन्ति।।

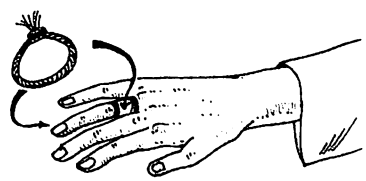

अपने आप को तिलक लगाएं और साथ ही जंग का चावल लगवाएं

यावत् इन्द्रादयो देवा, यावत् चन्द्र दिवाकरौ।
यावत् रामकथा लोके, भूयात् तावत् स्थितिः मम।।
मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु, पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु, मित्राणां उदयो मम।।
आयुः, आरोग्यं, ऐश्वर्यं, एतत् त्रितयं अस्तु मे।
जीवाहं, शरदः शतम्, रक्षाणो ब्रह्मणस् पते।।

मौली बंधवाए

यदा बन्धन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानः।
तन्म आबध्नामि शत शारदाय आयुष्मान् जरदष्टिः यथासत्।।

अपने आपको दुबारा तिलक लगाइए

स्वात्मने शिव स्वरूपाय समालभनं गन्धो नमः।

हाथ धोकर सिर पर अर्घ फूल रखिए

स्वात्मने शिव स्वरूपाय अर्घो नमः पुष्पं नमः।

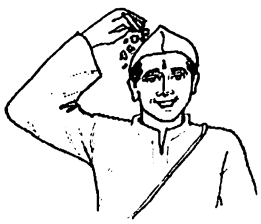

दीपक को तिलक और अर्घ फूल लगाए

स्व प्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरापहः।
प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।।
गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

धूप को तिलक और अर्घ फूल लगाए

वनस् पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत् तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।।
गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

सूर्य भगवान का ध्यान करके निर्माल्य पात्र में तिलक और अर्घ फूल डालिए

नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत साक्षिणे।
नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।।
गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

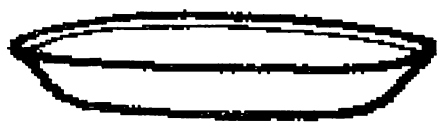

कटोरी से जिसमें विष्टर रखा हो
निर्माल्य पात्र में पानी छोटतें रहें।

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च।
न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म दींप शरणं प्रपद्ये।।
आत्मने शिवस्वरूपाय आधार शक्त्यै दीपधूप सङ्कल्पात् सिद्धिर् अस्तु। तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां / त्रयोदश्यां वासरान्वितायां महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलश देवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय

गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिम्यः, पितृगणयाग देवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, भगवते भवाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय, आग्नेये भूतबलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेताल राजाय, नैर्ऋतये बहुखातकेश्वराय, पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालाय, वायवे मंगलराजाय, उत्तरे योगिनी बलेभ्यः, ईशाने विश्वक् सेनाय, ऊर्ध्वे जयक्सेनाय, पाताले तेजाय, मध्ये चण्डाय, समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः, अभंयकरी देव्यै, क्षेमंकरी भवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं, शिवरात्रियाग निमित्तं, दीपधूपात्संकल्प सिद्धिः अस्तु दीपो नमः धूपो नमः।

बायां जन्यू रखकर पानी में तिल डालकर तर्पण करें

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे।
नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः।।
तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् फाल्गुणमासस्य
कृष्णपक्षस्य तिथौ अद्य, द्वादश्यां/त्रयोदश्यां।

निम्न वारों में जिस वार को शिवरात्रि हो
उस वार का नाम लेकर सब पितरों का गोत्र समेत नाम लेकर तर्पण करते रहें

सोमवासरान्वितायां, मंगलवासरान्वितायां, बुधवासरान्वितायां, वीरवासरान्वितायां भार्गववासरान्वितायां, शनिवासरान्वितायां, रविवासरान्वितायां।

पिता का नाम — **पित्रे**

दादा का नाम — **पितामहाय**

परदादा का नाम — **प्रपितामहाय**

माता का नाम — **मात्रे**

दादी का नाम — **पितामह्यै**

परदादी का नाम — **प्रपितामह्यै**

नाना का नाम — **मातामहाय**

पर नाना का नाम — **प्रमातामहाय**

परपर नाना का नाम — **वृद्धप्रमातामहाय**

नानी का नाम — **मातामह्यै**

पर नानी का नाम — **प्रमातामह्यै**

परपर नानी का नाम — **वृद्धप्रमातामह्यै**

इसी प्रकार दूसरे पितरों का नाम लेने के पश्चात् तर्पण करते रहिए

समस्त मातापितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यः शिवरात्रीयाग निमित्तं दीपः स्वधा धूपः स्वधा।

दायां जन्यू रख कर कटोरी में पानी,
तिलक और विष्टर रखकर तीन बार फूल डालिए

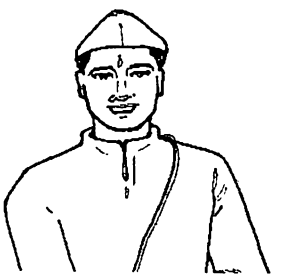

पहली बार — **संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः।**

दूसरी बार — **संसृष्टाः तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।**

तीसरी बार — **संय्यावः प्रियाः तन्वः संप्रिया हृदयानि वः।**
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियाः तन्वो मम।।

अब इसी कटोरी में से थोडा सा जल पहले शिवलिंग पर डालिए और तत्पश्चात् कटोरी को नीचे रख कर उस में रखे हुए विष्टर से कलश तथा अन्य सब देवों को पानी की छींटें लगाइए

अश्विनोः प्राणस् तौ ते प्राणन् दत्तात् तेन जीव, मित्र वरुणयोः
प्राणस् तौ ते प्राणन् दत्तात् तेन जीव, बृहस् पतेः
प्राणः स ते प्राणन् दत्तात् तेन जीव।

दो दर्भकाण्ड या फूल हाथ में लेकर
चामर कीजिए

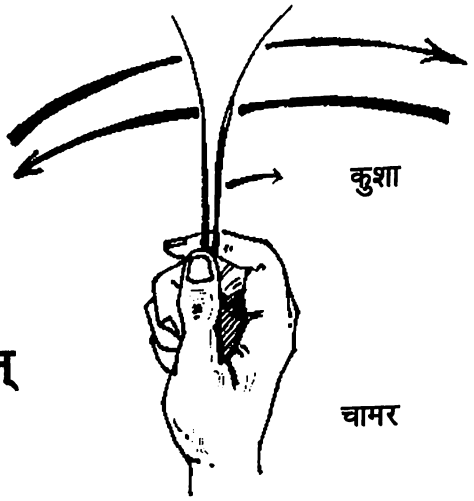

यो रुद्रो अग्नो हृदयाय नमः
यो अप् सु य ओषधीषु शिरसे स्वाहा
यो वनस्पतिषु शिखायै वषट्
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश कवचाय हुम्
तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट्
नमो अस्तु देवाः अस्त्राय फट्

इन दो दर्भकांडों को शिवलिंग के सामने रखिए
अब दो दर्भकांड और अर्घ के कुछ दाने दायें हाथ मे रखकर, दायें हाथ

की कलई पर बायां हाथ खोल कर रखिए

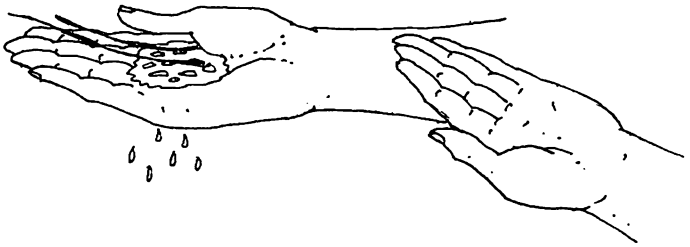

ॐ भूः पुरुषम् आवाहयामि नमः। ॐ भुवः पुरुषम् आवाहयामि नमः। ॐ स्वः पुरुषम् आवाहयामि नमः। ॐ भूर् भुवः स्वः पुरुषम् आवाहयामि नमः। ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् - 3

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्-3

ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्राय विद्महे क्षेत्रेश मुख्याय धीमहि, तन्नो वटुक भैरवः प्रचोदयात्-3

तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां / त्रयोदश्यां (वार का नाम) वासरान्वितायां महागणपतेः, कुमारस्य, श्रियाः, सरस्वत्याः, लक्ष्म्याः, विश्वकर्मणः, द्वार्देवतानां, प्रजापतेः, ब्रह्मणः, कलशदेवतानां, ब्रह्म विष्णु महेश्वर देवतानां, चातुर्वेदेश्वरस्य, सानुचरस्य, ऋतुपतेः नारायणस्य, फाल्गुणे शक्ति सहितस्य चक्रिणः, क्रिया सहितस्य गोविन्दस्य, दुर्गायाः, त्र्यम्बकस्य, वरुणस्य, यज्ञपुरुषस्य, अग्निष्वात्तादीनां पितृगण देवतानां, कालरात्र्याः, तालरात्र्याः, राज्ञिरात्र्याः, शिवरात्र्याः, भगवतः भवस्य देवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य,

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथस्य, आग्नेये भूतबलानां, दक्षिणे अग्नि वेताल राजस्य, नैर्ऋते बहुखातकेश्वरस्य, पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालस्य,

वायवे मंगलराजस्य, उत्तरे योगिनी-बलानां, ईशाने विश्वक् सेनस्य, ऊर्ध्वे जयक् सेनस्य, पाताले तेजस्य, मध्ये चण्डस्य, अभंयकरी देव्याः, क्षेमंकरी भवान्याः, सर्व शत्रु घातिन्याः, इह राष्ट्राधिपतेः स्थान भैरवस्य, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं, शिवरात्रि याग निमित्तं, कलश पूजनं, शिवरात्रि याग पूजनं, अर्चां अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।

इन अर्घ के दानों को कन्धों के ऊपर से फेंकिए, और दर्भ को निर्माल्य पात्र में छोडिए

अब तिल, सर्षप और जौ के दाने इकट्ठे मिलाकर चारों दिशाओं में फेंकिए

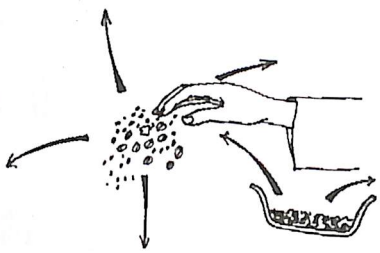

फिर दर्भ के दो–दो तिनके या फूल पहले कलश के सामने आसन के लिये डालते रहिए

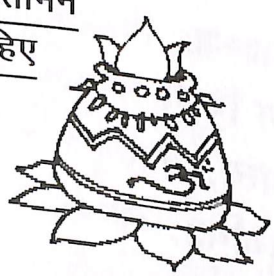

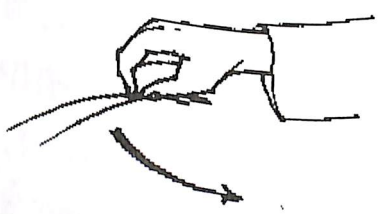

मृडा नो रुद्रो तनो मयस् कृधि क्षय द्वीराय नमसा विधेम ते यत् शम च योश्च मनुरायेजे पिता तद् अश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु।। महागणपतेः, कुमारस्य, श्रियः, सरस्वत्याः, लक्ष्म्याः, विश्वकर्मणः, द्वार्देवतानां, प्रजापतेः ब्रह्मणः, कलश देवतानां, ब्रह्म विष्णु महेश्वर

देवतानां, चातुर्वेदेश्वरस्य, सानुचरस्य, ऋतुपतेः नारायणस्य, फाल्गुणे शक्ति सहितस्य चक्रिणः, क्रिया सहितस्य गोविन्दस्य, दुर्गायाः, त्र्यम्बकस्य, वरुणस्य, यज्ञपुरुषस्य, अग्निष्वात्तादीनां, पितृगणदेवतानां, कालरात्र्याः, तालरात्र्याः, राज्ञिरात्र्याः, शिवरात्र्याः।

शिवलिंग के सामने डालिए

भगवतः भवस्य देवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य

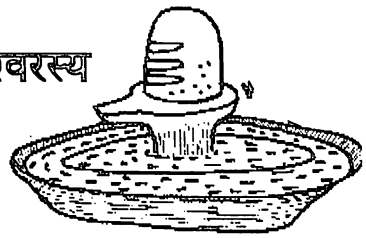

वटुकदेव तथा रामगुड आदि के सामने डालिए

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुक नाथस्य, आग्नेये भूतबलानां, दक्षिणे अग्नि वेताल राजस्य, नैर्ऋते बहुखातकेश्वरस्य, पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालस्य, वायवे मंगल राजस्य,

योगिनियों के सामने डाले

उत्तरे योगिनी बलानां,

ऋषि डुलजी को

ईशाने विश्वक्सेनस्य, ऊर्ध्वे जयक् सेनस्य,

क्षेत्रपालों को

पाताले तेजस्य, मध्ये चण्डस्य,

फिर से कलश को

समस्त शिवरात्री देवतानां, अभयंकरी देव्याः, क्षेमंकरी भवान्याः, सवशत्रुघातिन्याः, इह राष्ट्राधिपतेः स्थान भैरवस्य, इदम् आसनं नमः।

अर्घ समेत दर्भ के दो तिनके हाथ में रखकर देवताओं को आवाहन कीजिए

महाणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलश देवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणयाग देवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय, पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथाय, आग्नेये भूत बलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेताल राजाय, नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय, पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालाय, वायवे मंगलराजाय, उत्तरे योगिनी बलेभ्यः, ईशाने विश्वक् सेनाय, ऊर्ध्वे जयक् सेनाय, पाताले तेजाय, मध्ये चण्डाय, समस्त शिवरात्री यागदेवताभ्यः, अभयंकरी देव्यै, क्षेमंकरी भवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय, युष्मान् वः पूजयामि ॐ पूजय।

हाथ में रखे दर्भ के दो तिनके पहले की तरह हाथ में ही रखिए केवल अर्घ निर्माल्य पात्र में छोडकर पुनः नये से अर्घ के दाने हाथ में रखिए

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षय द्वीराय प्रभरामहे मतीः।
यथा नः शम् असद् द्विपदे चतुष् पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्।।
महागणपतिं, कुमारं, श्रियं, सरस्वतीं, लक्ष्मीं, विश्वकर्माणं, द्वार्देवताः, प्रजापतिं ब्रह्माणं, कलशदेवताः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवता, चातुर्वेदेश्वरं, सानुचरं, ऋतुपतिं नारायणं, फाल्गुणी शक्ति सहितं चक्रिणं, क्रियासहितं गोविन्दं, दुर्गां, त्र्यम्बकं, वरुणं, यज्ञपुरुषं, अग्निष्वात्तादीः, पितृगण याग देवताः, कालरात्रीं, तालरात्रीं, राज्ञिरात्रीं, राज्ञिरात्रीं, भगवन्तं भवंदेवं पार्वतीसहितं परमेश्वरं, पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं

देवी पुत्र वटुकनाथ, आग्नेये भूतबलान्, दक्षिणे अग्निवेताल राजं, नैर्ऋते बहुखातकेश्वरं, पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालं, वायवे मंगलराजं, उत्तरे योगिनीबलान्, ईशाने विश्वक्सेनं, ऊर्ध्वे जयक्सेनं, पाताले तेजं, मध्ये चण्डं, समस्त शिवरात्री देवताः, अभयंकरीं देवीं, क्षेमंकरीं भवानीं, सर्वशत्रुघातिनीं इह राष्ट्राधिपतिं, स्थान भैरवं आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय।

दोनों दर्भकाण्ड और अर्घ निर्माल्य पात्र में छोड़कर वटुकदेव एवं अन्य देवों को अर्घपुष्प चढ़ाते रहिए पहले वटुकदेव तथा रामगुड़ को

1. **कुलाकुलपदे योसौ पालको भूतविग्रहः।**
   चिद् आनन्द रस पूर्णं वन्दे वटुक भैरवं।।

2. **आवाहयामि चाग्नेये भूतबलगणं विभुम्।**
   शवासनं रसभुजं भक्ताभयवर प्रदम्।।
   आग्नेये भूतबलेभ्यो नमः।

3. **आवाहयामि वक्त्रैकम् अग्निवेताल भैरवम्।**
   खरकर्णं विशालाक्षं दक्षिणे विघ्न हारिणम्।।
   दक्षिणे अग्निवेताल राजाय नमः।

4. **आवाहयामि नैर्ऋत्यां त्वां बहुखातकेश्वरम्।**
   उग्रदंष्ट्रं महौजस्कं अष्टबाहुं शवासनम्।।
   नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय नमः।

5. **आवाहयामि वारुण्यां त्वां स्थान क्षेत्र पालकम्।**
   त्रिलोचन पंचवक्त्रं मुण्ड खड्गाद्युदा युधम्।।
   पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालाय नमः।

6. आह्वये मंगलेशान पंचवक्त्रं कपालिनम्।
षड्भुजं रक्तवर्णं त्वां वायवे सिद्धिदं विभुम्।।
वायवे मंगलराजाय नमः।

योगिनियों को

7. योगिनी बल वृन्दं तं प्रपद्येऽहं चतुर्भुजम्।
उत्तरे योगिनी युक्तं नृत्य गीतप्रियं प्रभुम्।।
उत्तरे योगिनी बलेभ्यो नमः।

ऋषिडुलू को

8. विष्वक्सेनं प्रपद्येह पंचवक्त्रं भयानकम्।
अष्टबाहुं दीर्घनासम् ऐशान्यां सिद्धिदायकम्।।
"ईशाने विष्वक्सेनाय नमः।

9. जयक्सेनं प्रपन्नोहं त्रिनेत्रं सूकराननम्।
आकाशे विघ्न भीतिघ्नं प्रेतासन कृत स्थितिम्।।
"ऊर्ध्वे" जयक्सेनाय नमः।

क्षेत्रपालों को केवल अर्घ

10. आवाहयामि पाताले स्वामिनं तेजभैरवम्।
त्रिनेत्रं प्रेत मध्यस्थं नानायुध विराजितम्।।
"पाताले" तेजाय नमः।

11. आवाहयाम्यहं "मध्ये" चण्डं चण्डेश्वरं विभुम्।
सप्त वक्त्रं विंश भुजं भक्ता भीष्ट भयप्रदम्।।
"मध्ये" चण्डाय नमः।

अब शिवलिंग पर अर्घफूल चढ़ाते रहिए

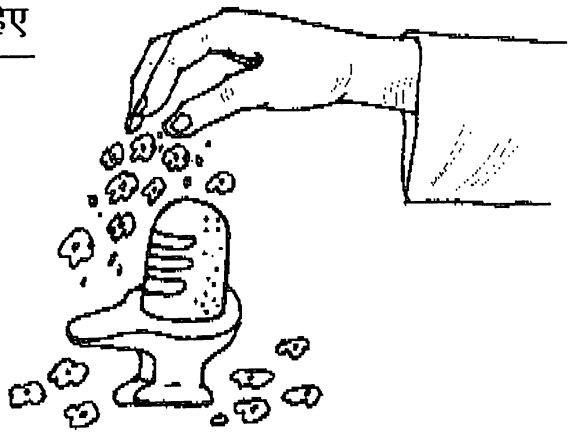

1. लिङ्गेद्य भक्त दयया क्षणमात्रं एकं, स्थानं विधाय भवमत् विहितां पुरारे।
सर्वेश विश्वमय हृत् कमलादि रूढ़, पूजां गृहाण भगवन् भव मेऽद्य तुष्टः।।

2. भूमेर्जलात् च पवनात् अनलात् हिमांशोर् उष्णार्चिषो हृदयतो गगनात् समेत्य।
लिंगेऽद्य सन् मणिमये मत् अनुग्रहार्थ भक्त्यैक लभ्य! भगवन्! कुरु सन्निधानम्।।

3. नमो महेश्वरागच्छ देव देव जगत्पते। प्रसांद कुरु मे देव नमस्तुभ्यं हि शंकर।।

4. आवाहयामि वृषभासनं ईश्वरं तं गौरीपतिं सकल भीतिहर सुरेशम्। चर्माम्बरं दशभुजं च विभूति हस्तं व्यालैः विभूषित तनुं मख रक्षाणार्थम्।।

5. आगच्छ मृत्युञ्जय चन्द्रमौले व्याला जिना लंकृत शूलपाणे। स्वभक्त संरक्षण कामधेनो! प्रसीद सर्वेश्वर पार्वतेश।।

6. आयाहि भगवन्! शम्भो! सर्वेश! गिरिजापते।
प्रसन्नो भव देवेश! नमस् तुभ्यं हि शंकर।।

7. भगवन् पार्वतीनाथ! भक्तानुग्रह कारक।
अस्मत् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।

8. इत्याहूय तु गायत्रीं त्रिः समुच्चार्य तत्त्ववित्,
मनसा चिन्तितैः द्रव्यैः देवं आत्मनि पूजयेत्।
तेजोरूपं ततः क्षिप् त्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्।।

चारों ओर जौ के दाने फेंकें

फिर तीन बार प्राणायाम कीजिए

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यं,
ॐ तत् सवितुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्
ॐ आपो ज्योति *रसोमृतम् ब्रह्म भूः भुवः स्वरोम्-3*

अब कटोरी से जलधारा हाथ में डालकर कटोरी में वापस डालें

शन्नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये।
शंय्योर् अभिस्रवन्तु नः।।

फिर इस कटोरी में जल, केसर, खील (लाय) सवौषधी थोड़ा–थोडा डालकर विष्टर साथ रखें। पूजामंडप में विराजमान सब देवताओं को प्रणाम करें

भगवन्तः पाद्यं पाद्यं।

इस कटोरी से थोड़ा थोड़ा जल पहले शिवलिंग पर चढ़ाते रहिए, साथ ही घंटा भी बजाते रहिए

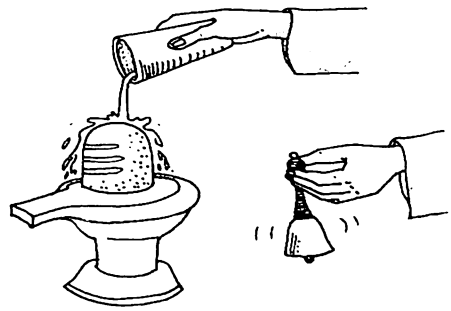

1. **हिरण्य वर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यासु इन्द्रः।**
   या अग्निं गर्भं दधिरे विरूपाः ता न आपः शंस्योना भवन्तु।।

2. **यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्ष्ये या अन्तरिक्षे बहुधा भवंतु।**
   या अग्निं गर्भं दधिरे विरूपाः तान आपः शंस्योना भवंतु।

3. **यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम्।**
   या अग्निं गर्भं दधिरे विरूपाः तान आपः शंस्योना भवंतु।।

4. **शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्व उपस्पृश्यत त्वचं मे**
   मधुः च्युतः शुचयो या पावकाः तान आपः शंस्योना भवंतु।।

5. **भगवते भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय पाद्यं नमः**

कटोरी में थोड़ा जल बचाकर रखिए, उसमें रखे विष्टर से पहले कलश को पानी की छीटें डालते रहिए

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः,

प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलशदेवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणयागदेवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै।

कलश के बाद वटुक देव तथा रामगुडू को इसी तरह छींटे देते रहें

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथाय, आग्नेये भूतबलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेतालराजाय, नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय, पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालाय, वायवे मंगलराजाय,

अब योगनियों को

उत्तरे योगिनी बलेभ्यः,

ऋषि डुलजी को

ईशाने विश्वक्सेनाय, ऊर्ध्वे जयक्सेनाय,

अब दो क्षेत्रापालों को

पाताले तेजाय, मध्ये चण्डाय,

मंडप में विराजमान सब देवताओं को

समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः, अभयंकरी देव्यै, क्षेमंकरी भवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय पाद्यं नमः।

कटोरी में बचा पानी निर्माल्यपात्र में छोड़कर दुबारा पहले की तरह कटोरी से नई जलधरा हाथ पर छोड़ते हुए उसे कटोरी में वापिस डालिए

शन्नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंय्योर् अभिस्रवन्तु नः।।

अब इसमें जल, दूध, दही, घी, चावल, खील, सर्षप, डालें तथा विष्टर भी साथ रखें, कटोरी को नीचे रखकर सब भैरवों को प्रणाम करें

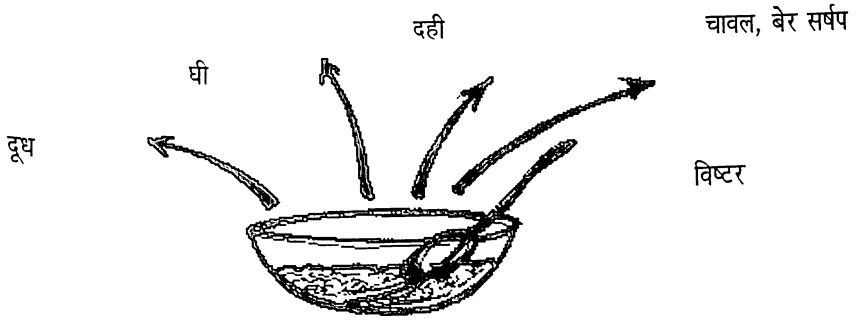

भगवन्तः अर्घ्यम् अर्घ्यम्

अब शिवलिंग पर पहले जल डालिए

त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञं साधनम् अङ्कुङ् कविम् अवसे निह्वयामहे।
आरे अस्मद् दैव्यं हेडो अस्यतु सुमतिम् इद्वयम् अस्या वृणीमहे।।

अब इसी कटोरी के जल से कलश को पहले की तरह विष्टर से पानी की छींटें देते रहिए

महागणपति, कुमार, श्री, सरस्वती, लक्ष्मी, विश्वकर्मन्, द्वार्देवताः, प्रजापते, ब्रह्मण्, कलश देवताः, ब्रह्मविष्णु महेश्वर देवताः, चातुर्वेदेश्वर, सानुचर, ऋतुपति नारायण, फाल्गुणे शक्तिसहित चक्रिण्, क्रिया सहित गोविन्द, दुर्गे, त्र्यम्बक, वरुण, यज्ञपुरुष, अग्निष्वात्तादयः, पितृगणदेवताः कालरात्रि, तालरात्रि, राज्ञिरात्रि, शिवरात्रि,

वटुकदेव तथा रामगुड़ को

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्रवटुकनाथ भैरव, आग्नेये भूतबलाः, दक्षिणे अग्निवेताल राज, नैर्ऋते बहुखातकेश्वर, पश्चिमे स्थानक्षेत्रपाल, वायवे मंगलराज,

योगिनियों को

उत्तरे योगिनी बलाः,

ऋषि डुलजी को

ईशाने विश्वक्सेन, ऊर्ध्वे जयक्सेन,

क्षेत्रपालों को

पाताले तेज, मध्ये चण्ड, समस्तशिवरात्रि देवताः, अभयंकरी देवि, क्षेमंकरी भवानि, सर्वशत्रुघातिनि, इह राष्ट्राधिपति स्थान भैरव, इदं वः अर्घ्यं नमः।

कटोरी में बचे पानी को निर्माल्य पात्रा मे छोड़कर शिवलिंग पर साफ पानी डालते रहिए

इदं पित्रे मरुतां उच्यते वचः स्वादो स्वादीयो रुद्राय वर्धनम्।
रास्वा चनो अमृत मर्त्यभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृड।।
भगवते भवाय देवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय मंत्र स्नानं नमः

कलश और वटुक देवता आदि को भी छींटे दीजिए

गणपति कलशमंडल देवताभ्यः, पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथ भैरवेभ्यः, तेजाय, चंडाय, समस्त शिवरात्री देवताभ्यः मंत्र स्नानं नमः।

शिवजी/सत्रपुतलू के स्नान के लिए किसी पात्र में जल रखे और उस में दूध, दही, घी, शहद, बेर, सर्षप, तिल चावल, पुष्प तिलक और भस्म डालिए यही जल कटोरी से शिवलिंग पर डालते रहे और बायें हाथ से घंटा बजाते जाइए

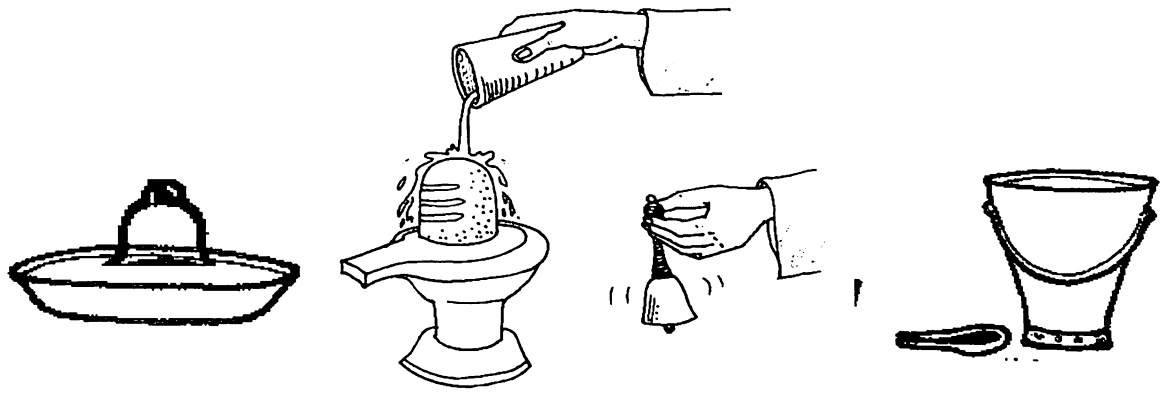

1. असङ्ख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
   तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

2. येऽस्मिन्महत्यर्णवे अन्तरिक्षे भवा अधि।
   तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

3. ये नील ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवं रुद्रा उपाश्रिताः।
   तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

4. ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः।
   तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

5. ये वनेषु शिषि-पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
   तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

6. येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
   तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

7. ये भूतानाम् अधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

8. ये पथीनां पथिरक्षय ऐडमृडाय व्युधः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

9. ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषंगिणः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

10. य एतावन्तो वा भूयाँसो वा दिशो रुद्रा वितष्ठिरे।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

11. नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षम् इषवः तेभ्यो
दश प्राचीर् दश दक्षिणा दश प्रतीचीर् दशोदीर् चीर् दशोर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश् च नो द्वेष्टि तम् एषां जम्भे दधामि।।

12. नमो अस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवस् तेभ्यो दश
प्राचीर् दश दक्षिणा दश प्रतीचीर् दशोदीचीर् दशोर्ध्वाः। तेभ्यो
नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश् च नो द्वेष्टि तम्
एषां जम्भे दधामि।।

13. नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषाम् अन्नम् इषवः तेभ्यो
दश प्राचीर् दश दक्षिणा दश प्रतीचीर् दशोदीचीर् दशोर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश् च न द्वेष्टि
तम् एषां जम्मे दधामि।।

जल डालते रहिए

14. ॐ भूर् भुवः स्वः स्वाहा क्षुत् च शुक् च उष्णा च उग्रा च भीमाच राष्ट्रा च बीभत्सा च वैशन्ता च शार्दूलाका च चानिराका चामीवाचा नाहुतिश् च निर् ऋति रेतास् ते अग्निवर्तिमतीस् तन्वस्ताभिस् तम् गछ् योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्भः तम् अर्पय।

15. यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो वनस् पतिषु।
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।।
भगवते भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय पंचदश स्नानानि नमः।

कलश की ओर विष्टर से जल की छींटे देते रहिए

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये ब्रह्मणे, कलशदेवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविंदाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्नि ष्वातादिभ्यः, पितृगण-देवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै,

वटुक तथा रामगुड को जल की छींटें

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय, आग्नेये भूतबलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेतालराजाय, नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय, पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालाय वायवे मंगलराजाय,

योगिनियों को जल की छींटे

उत्तरे योगिनी बलेभ्यः,

डुलू आदि को जल की छींटें

ईशाने विश्वक् सेनाय, ऊर्ध्वे जयक् सेनाय,

क्षेत्रपालों को जल की छींटें

पाताले तेजाय, मध्ये चंडाय, समस्तशिवरात्रीयाग देवताभ्यः, अभयंकरी देव्यै, क्षेमंकरी भवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय, पंचदश स्नानानि नमः।

कटोरी से जल शिवलिंग पर चढ़ाएं

ब्रह्मादयः देवाः तृप्यन्ताम्

गले में सीधा और दोनों अंगूठों में जन्यू रखकर फिर से जल शिवलिंग पर चढ़ाए

कण्ठोपवीती -

सनकादयः ऋषयः तृप्यन्ताम्

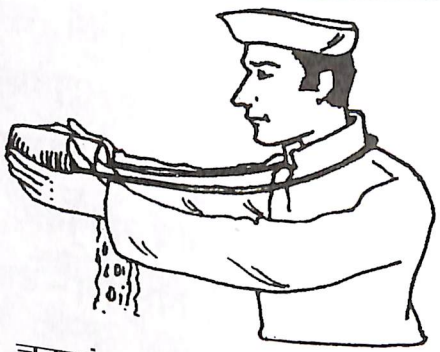

जन्यू को बाएं रख कर शिवलिंग पर जल चढ़ाएं

अपसव्येन -

अग्नि ष्वात्ता दयःपितरः

तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम् तृप्यन्ताम्

दायां जन्यू करके शिवलिंग पर फिर जल चढ़ाएं

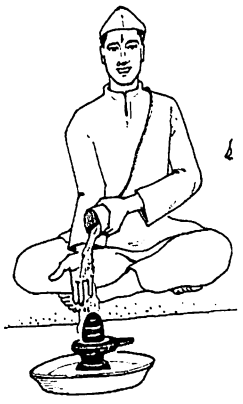

सव्येन -

आ ब्रह्म स्तम्ब पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरम्।
जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवम् अस्तु।।

शिवलिंग पर साफ जल डालिए

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकम् इव बन्धनात् मृत्योर् मुक्षीय मामृतात्।।
भवायदेवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय,
शिवरात्रीदेवताभ्यः मंत्रगुडकं परिकल्पयामि नमः।

अपने बायें हाथ की हथेली में थोडे से चावल के दाने और पानी रख कर सब देवताओं के ऊपर से आरात्रिका (आलत) निकाले

रक्षोहणं वाजिनम् आजिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठम् उपयामि शर्म।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो देवः सरिषः पातु नक्तम्।।
ते तृप्यन्तु वौषट्, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय,
शिवरात्रीयागदेवताभ्यः आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः।

बायें कधें से इस जल को फेंके

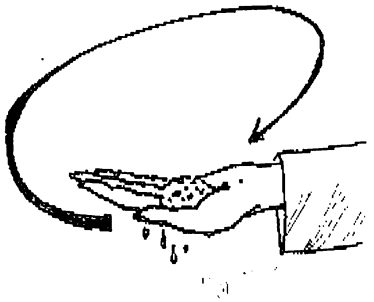

अब शिवलिंग तथा वटुकदेव के चरणों के जल से अपने नेत्रों का स्पर्श कीजिए

मृड त्वम् अस्मभ्यं रुद्र एतत् अस्तु हुतं तव।
पशून् अस्माकं मा हिंसीः एतत् अस्मा असत् हुतम्।।
भवाय देवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, शिवरात्रीयाग देवताभ्यः, नेत्रस्पर्शनं नमः।

अब किसी दूसरे बर्तन में या भद्रपीठ को साफ करके आसन के लिये फूल बिछाएं

ॐ आसनाय नमः, पद्मासनाय नमः, प्रेतासनाय नमः, वृषभसनाय नमः, पीठासनाय नमः, विचित्रवाहनासनाय नमः।

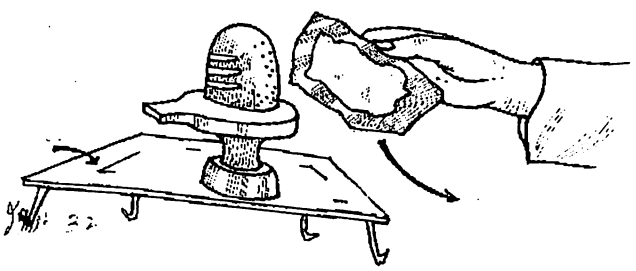

अब शिवलिंग को इस पर बिठाएं और चांदी के वरके चढ़ाए

1. **उत्तिष्ठ भगवन् शम्भो, उत्तिष्ठ गिरिजापते।**
   उत्तिष्ठ त्रिजगत् नाथ, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु।।
2. **किम् आसनं ते वृषभासनाय, किं भूषणं वासुकिभूषणाय।**
   वित्तेशभृत्याय किम् अस्ति देयं, महेश किं ते वचनीयं अस्ति।।

यहां 'महिम्नः पार' पढ़ते हुए या दूसरे स्तोत्रों से शिवलिंग पर अर्घपुष्प चढ़ाते जाइए। महिम्नः पार के पश्चात् फिर पुष्प चढ़ाते जाइए।

मा नो महान्तं उत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तं उत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं उत मातरं मा नः प्रियाः तन्वो रुद्र रीरिषः।। भगवते भवाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, शिवरात्रीयागदेवताभ्यः अनुलेपनं परिकल्पयामि नमः।

कलश, वटुक तथा अन्य भैरवों को वस्त्र या फूल चढ़ाएं

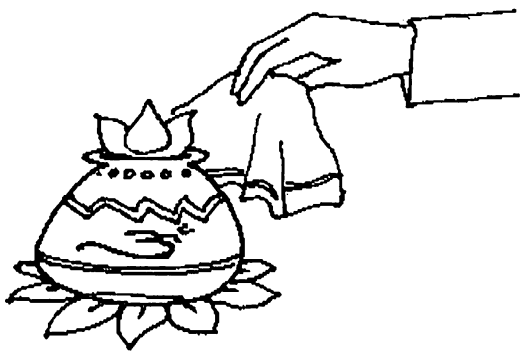

मा नः तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर् हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे।। भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय, गणपतिकलशमंडलयाग देवताभ्यः, शिवरात्री देवताभ्यः वस्त्रं समर्पयामि नमः।

शिवलिंग तथा वटुकदेव आदि पर यज्ञोपवीत या पुष्प डालिए

उप ते स्तोमन्पशुपा इवाकरं रास्वा पितर् मरुतां सुम्नम् अस्मे। भद्रा हि ते सुमति मृडयत् तम् अथा वयम् अव इत्ते वृणीमहे। भवायदेवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, गणपति कलशमंडलयागदेवताभ्यः, शिवरात्री देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।

पहले शिवजी को केसर अथवा चंदन का तिलक लगाए

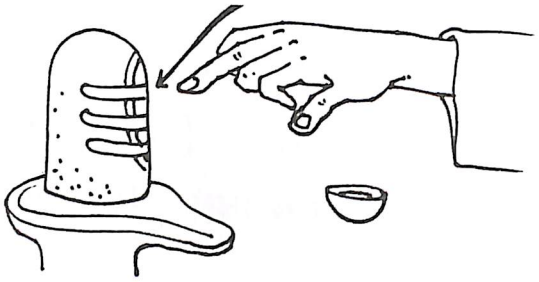

आरे ते गोध्नं उत पुरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नं अस्मे ते अस्तु।
मृडा च नो अधि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः।।
भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, समालभनं गन्धो नमः।

अब कलश को सिन्दूर का तिलक लगाते रहिए

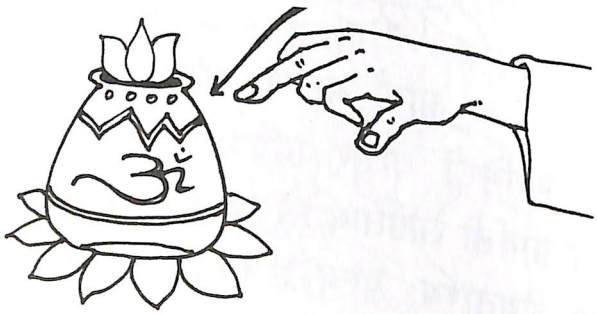

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलशदेवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिभ्यः, पितृगणदेवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै,

वटुकदेव और रामगुड को

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय, आग्नेये भूतबलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेतालराजाय, नैर्ऋृते बहुतखातकेश्वराय, पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालाय, वायवे मंगलराजाय,

योगिनियों को

उत्तरे योगिनीबलेभ्यः,

डुलू आदि को

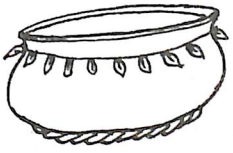

ईशाने विश्वक्सेनाय, ऊर्ध्वे जयक्सेनाय

क्षेत्रपालों को

पाताले तेजाय मध्ये चण्डाय,

फिर सब देवताओं को

अभयंकरी देव्यै, क्षेमंकरी भवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय, सभालभनं गन्धो नमः।

हाथ धोकर शिवलिंग पर अर्घपुष्प चढ़ाए

अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृण्वन्तु नो हव्यं रुद्रो मरुत्वान्।
तन्नो मित्रे वरुणो मामहन्तां अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः।।
भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय अर्घो नमः पुष्पं नमः।

कलश को अर्घपुष्प

महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलश देवताभ्यः, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिभ्यः, पितृगणदेवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै,

वटुकदेव तथा अन्य भैरवों को

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय, आग्नेये भूतबलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेताल राजाय, नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय, पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालाय, वायवे मंगलराजाय, उत्तरे योगिनीबलेभ्यः, ईशाने विश्वक्सेनाय, ऊर्ध्वे जयक्सेनाय, पाताले तेजाय, मध्ये चण्डाय, समस्त शिवरात्रीदेवताभ्यः, अभयंकरी देव्यै, क्षेंमंकरी भवान्यै, सर्वशत्रु घातिन्यै, इहराष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय अर्घो नमः पुष्पं नमः।

धूप घुमाएं

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं योस्मान् धूर्वति तं धूर्व, यं वयं धूर्वामः तं च धूर्व। देवानाम् असि वह्नितमं सस्नितमम् पप्रितमम् इष्टतमम् देवहुतमम् विष्णोः क्रमोसि आह्नुतम् असि हविः दानं दृंहस्व माह्वान् मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्ष उरु त्वा वाताय वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वत्ऽरुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुमेन छन्दसाऽङ्गिरस्वत्। आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाऽङ्गिरस्वत्। विश्वेत्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्तु आनुष्टुमेन छन्दसाऽङ्गिरस्वत्, इन्द्रस्त्वा

धूपयतु,वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु। गणपतिकलशमंडल देवताभ्यः, भवाय देवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, कालरात्र्यै, तांलरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, समस्त शिवरात्री यागदेवताभ्यः, अभयंकरी देव्यै, क्षेमंकरी भवान्यै, सर्वशत्रु घातिन्यै, इहराष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय, धूपं आघ्रापयामि नमः।

रत्नदीप दर्शाए

तेजोसि शुक्रं असि ज्योतिर् असि धामासि प्रियन् देवानां अनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञियेस्यो गृह्णामि। गणपति कलश मंडल देवताभ्यः, भवाय देवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, समस्त शिवरात्रि यागदेवताभ्यः, रत्नदीपं दर्शयामि

काफूर प्रज्वलित कर दिखाए

कर्पूरदीप सुमनोहरं प्रभो
ददोनि ते देववर प्रसीद मे।
पापान्धकार त्वरित निवारय,
प्रज्ञानदीप मनसि प्रज्वालरय।।
गणपति कलश मंडल देवताभ्यः भवाय देवाय
पार्वती सहिताय परमेश्वराय शिवरात्री देवताभ्यः
कर्पूरं परिकल्य यामि।

अब परिवार के सभी सदस्यों को तिलक लगाए और मौली बांधिए।
पुरूष दायें कलाई पर मौली बांधे और स्त्री बाई कलाई पर मौली बांधें

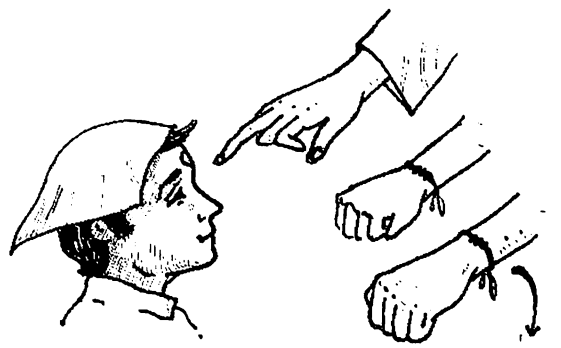

पुरूषों और बालको को इस मंत्र द्वारा तिलक लगाएं

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु, पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां उदयस् तव।
आयुः आरोग्यं ऐश्वर्यं एतत्त्रितयं अस्तु ते
जीव त्वं शरदः शतम्।। रक्षाणो ब्रह्मणस् पते।।

सुहागनों को इस मंत्र द्वारा तिलक लगाएं

धनपुत्रवती साध्वी सततम् भर्तृ वल्लभा।
मनोज्ञा ज्ञानसहिता तिष्ठ त्वं शरदः शतम्।।

कन्याओं को इस मंत्र द्वारा तिलक लगाएं

जातवेदसे सुनवाम, सोमम् अराती यतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षत् अति दुर्गाणि विश्वा, नावेव सिन्धुम् दुरितातिं अग्निः।।

मौली बांधने का मंत्र, सब का एक जैसा है।

यदा बन्धन्दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानः।
तन्म आबध्नामि शत शारदाय आयुष्मान् जरदष्टिः यथासत्।।

हाथ में फूल लेकर सब खड़े होकर आरती उतारें

1. **ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली,**
   कृततताडन परिपीडन मरणागम समये।
   डउमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्,
   शिव शंकर शिव शंकर हर मे हर दुरितम्।।
2. **अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसंचय दलिते,**
   पविकर्कश कटु जल्पित खल गर्हण चलिते।

शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन्,
शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्।।

3. भवभंजन सुररंजन रवलवंचन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्,
शिव शंकर शिवशंकर हरमे हर दुरितम्।।

4. शक्रशासन कृतशासन चतुर् आश्रमविषये,
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विजक्षत्रिय वनिता शिशुदर कम्पित हृदये,
शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्।।

5. भवसम्भव विविधामय परिपीडित वपुषम्,
दयितात्मज ममताभर कलुषीकृत हृदयम्।
कुरु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततम्,
शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम्।।

कलश तथा अन्य देवताओं पर फूल चढ़ांए

गणपति कलशमंडल देवताभ्यः, भगवते भवाय देवाय, शर्वायदेवाय, रुद्रायदेवाय, उग्राय देवाय, पशुपतये देवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय, समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः।

वटुकदेव तथा अन्य देवों पर फूलों का छत्र/फूल चढ़ाए

**काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती पुरुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।**

गणपतिकलश देवताभ्यः, भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, ॐ पूर्वे ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय, समस्तशिवरात्रि, देवताभ्यः छत्रं परिकल्पयामि नमः।

शीशा दिखाए

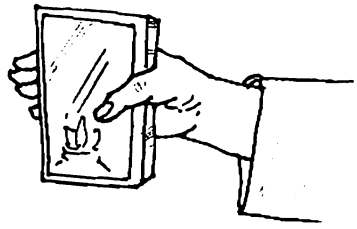

तत् चक्षुर् देवहितं पुरस्तात् शुक्रम् उच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्।।
शिवरात्री देवताभ्यः आदर्शं परिकल्पयामि नमः।

निर्माल्य में कुछ जल डालें

एताभ्यो देवताभ्यो धूपदीपात् संकल्पसिद्धिः अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

कलश तथा अन्य देवताओं पर फूल चढ़ाए

एताभ्यो देवताभ्यो वासो नमः

नमस्कार करें

एतासां शिवरात्रि देवतानां अर्घ्य दानाद्यर्चन विधिः सर्वः परिपूर्णोस्तु।

अब परिवार के सब सदस्य वटुक भैरव के घडे में इस मंत्र से दूध और कन्द चढ़ाए

ईशानं त्वा शुश्रुमा वयं धनानां धनपते गोमद् अ अश्ववत् भूरि पुष्टं हिरण्यवत् धनवत् देहि मह्यम् ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्रवटुकनाथाय मात्रमधुपर्कं चरुं समर्पयामि नमः।

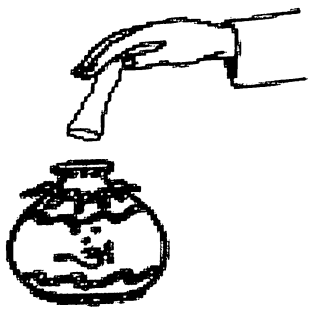

दूसरे पात्रों में भी थोड़ा थोड़ा दूध डालिए

समस्त शिवरात्रि देवताभ्यो मात्रामधुपर्कं चरुं समर्पयामि नमः।

किसी बर्तन में दो तीन इलायची, दो तीन लौंग, थोड़ा नारियल तथा किशमिश के दाने ताम्बूल के रूप में भेंट कीजिए

ताम्बूलं विविधैः द्रव्यैः नारिकेलादिभिः युतम्।
मुरवशुद्धिकरं स्वामिन् गृहाण वरदो भव।
शिवरात्रि देवताभ्यः ताम्बूलं समर्पयामि नमः।।

शिवलिंग की मानसिक भाव (मान) से अर्द्ध प्रदक्षिणा करें

यानि कानि च पापानि ब्रह्म हत्यादिकानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध प्रदक्षिणात्।।
ॐ नमो भैरवेशाय वटुकभैरव सानुग भगवन् प्रसीद।

शिवलिंग पर पुष्प चढ़ाते रहिए

न- **नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्ग रागाय महेश्वराय।**
देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।

मः **मंदाकिनी सलिल चंदन चर्चिताय नंदीश्वर प्रमथ नाथ महेश्वराय।**
मंदार पुष्प बहु पुष्प सु पूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिण्वाय।।

शि **शिवाय गौरी वदनाब्ज वृंद सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।**
श्रीनील कण्ठाय वृष ध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।

वा **वसिष्ठ कुंभोद् भवगौतमादि मुनीन्द्र वंद्याय गिरीश्कराय।**
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।

य यज्ञ स्वरूपाय जटा धराय पिनाक हस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगंबराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।

हाथ जोड़कर अष्टाङ्ग प्रणाम करिए

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा च नमस्कारं करोमि नमः।

निर्माल्य पात्र में पानी छोड़ें और जंग के चावल को पानी की छींटे दे

अन्नं नमः, अन्नं नमः, आज्यं, आज्यं अद्य दिने अद्य यथा संकल्पात् सिद्धि अस्तु।

फिर नमस्कार करें

अन्नहीनं क्रिया हीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मंत्रहीनं च यत् गतं तत् सर्वं अछिद्रं सम्पूर्णं अस्तु एवं अस्तु।

कटोरी से हाथ में जल की धरा छोड़ते हुए उस जल को उसी कटोरी में वापिस डालिए

शन्नो देवीर् अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्योर् अभिस्रवन्तु नः।।

इस में से थोड़ा जल पहले कलशपात्र में डालिए

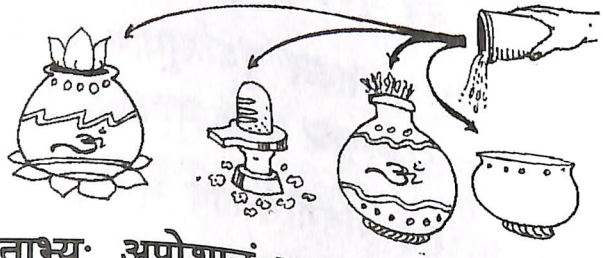

गणपतिकलश मंडल देवताभ्यः अपोशानं नमः आचमनीयं नमः

शिवलिंग पर थोड़ा जल डालिए

भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय अपोशानं नमः आचमनीयं नमः

वटुक देव तथा अन्य पात्रों में भी जल डालिए

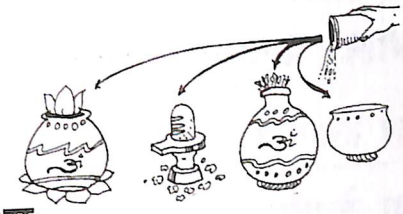

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथ देवताभ्यः,

अंत में क्षेत्रपालों में भी जल डालिए

तेजाय चण्डाय समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः अपोशानं नमः आचमनीयं नमः।

दुबारा कटोरी से हाथ में पानी की धारा छोड़ते हुए फिर उसी में वापिस डालें और उसी में सब की दक्षिणा डाल दें

शन्नो देवीर् अभिष्टये, आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योर् अभिस्रवन्तु नः।

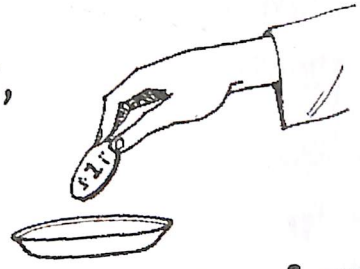

पहले कलश को दक्षिणा अर्पण करें

गणपति कलश मंडल देवताभ्यो, दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजतनिष्कर्णं ददानि।

अब शिवलिंग /सज्जपुतलू को

भगवते भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, दक्षिणायै तिलहिरण्य रजतनिष्कर्णं ददानि।

फिर वटुकभैरव को

पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय, दक्षिणायै तिलहिरण्य रजतनिष्कर्णं ददानि।

अन्य देवताओं को

समस्तशिवरात्रि देवताभ्यः, दक्षिणायै तिलहिरण्य रजतनिष्कर्णं ददानि।

और अन्त में क्षेत्रपालों को

तेजाय, चण्डाय, दक्षिणायै तिलहिरण्य रजतनिष्कर्णं ददानि।

फिर इसके साथ ही एक एक सिक्का सब देवताओं को अर्पण करें

एता देवताः सदक्षिणा अनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।

इसी पानी से अपने मुंह पर जल की छीटें लगावें कलश पर दो बार फूल चढ़ावें

ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति सूरयः दिवीवचक्षुर् आततम्।
तत् विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोः यत् परमं पदम्।।

अब वटुक देव पर फूल

1. **नाथं नाथं त्रिभुवन नाथं, भूतिसितं, त्रिनयनं, त्रिशूलधरम्,**
   उपवीती कृत भोगिनं, इन्दु कला शेखरं वन्दे।
2. **करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिः,**
   तरुण तिमिर नील,ः व्याल यज्ञोपवीती।
3. **क्रतु समय सपर्या, विघ्न विच्छेद दक्षो,**
   जयति वटुकनाथः, सिद्धिदः साधकानाम्।।
4. **ब्रह्मन् ब्रह्माण्ड खण्डे, क्षप रुधिर वसा, सान्द्र सेधो प्रदग्धान्,**
   उष्णोष्णः कृष्णवक्षः, पति शिरसि पतत्, पर्वतैः पूरयाब्धिम्।
   पातालेन्द्रस् तु तारं, कुरु कनक गिरिं, तांडवीं तिष्ठ, शम्भो,
   देवी चक्रं, चिकिर्षुः, स्वयमपि वटुको, वंदिताज्ञा पुनातु।

प्रणाम करना

अथ वैश्वदेव
(अब वैश्वदेव करना है)

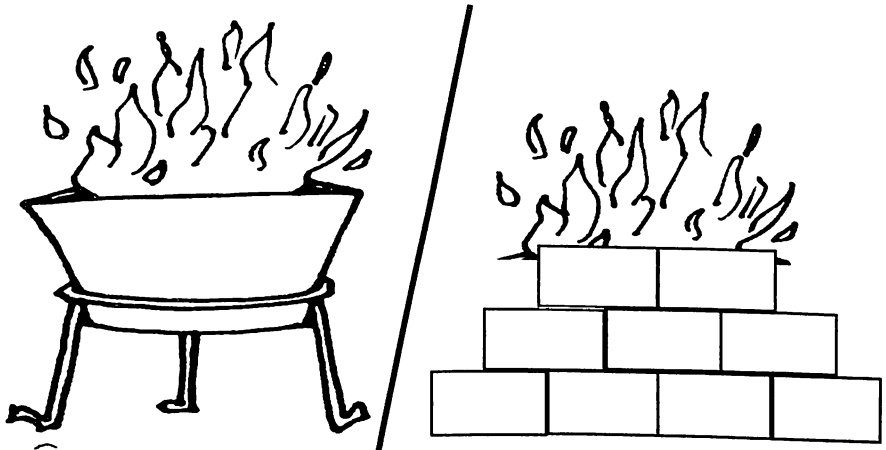

अथ वैश्वदेव विधि:

अग्निकुण्ड

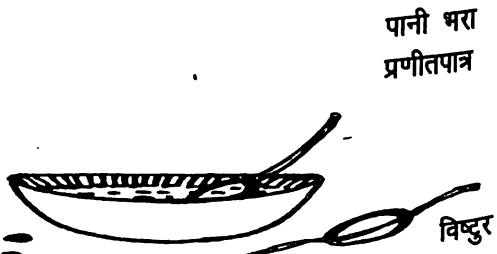

पानी भरा प्रणीतपात्र

विष्टुर

तिल

फूल

वैश्वदेव आरम्भ करने से पहले अग्निकुंड या एक दो ईंटें लाकर सामने रखें। फिर उस में लकड़ी के कुछ टुकड़ें डाल कर रखें। अग्नि के नैर्ऋत कोण में यानि अपनी दाईं ओर विष्टर, अक्षत (चावल), तिल, फूल और पानी भरी कटोरी रखें। इसको प्रणीत पात्र कहते हैं।

फिर अपनी रीति के अनुसार चार बर्तनों में पकाया हुआ भोजन, सब्जी, व्यंजन आदि समेत लाइए

1. पहली थाली — इस में नैवेद्य के लिए भोजन तथा सब व्यंजन पकवान रखें
2. दूसरी थाली — इसमें अन्नकणों तथा पितरों के लिए 8–10 चावल की रोटियां रखें
3. तीसरी थाली — इसमें चुट् तथा अन्य प्राणियों (यानि पशु, पक्षी आदि जीवों) की बलि के लिए व्यंजन समेत अन्न रखें
4. चौथी थाली — शिवरात्रि देवताओं तथा डुलू में बलि के लिये अन्न, सब पकवान सहित रखें

अब वैश्वदेव करना है।

इसके लिये पुस्तक में बताए निर्देशों के अनुसार सब चीजें पहले ही तैयार रखें। फिर अग्नि को प्रज्वलित करें और प्रणीत पात्र में तिल के दाने और फूल डालें

पात्रं तिलाक्षतैर् मिश्रैः कुसुमोदक विष्टरैः,
अग्नेः चैशान दिक् भागे प्रणीतम् अभिधीयते।
प्रणीतम् नैर्ऋते स्थाप्यं स विष्णुर्नात्र संशयः।।

अब प्रणीतपात्र में तीन बार फूल डालिए

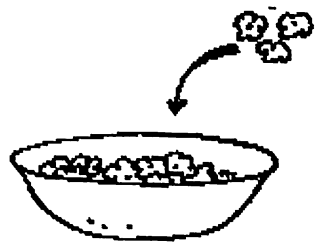

पहली बार – **संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः।**
दूसरी बार – **संसृष्टाः तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।**
तीसरी बार – **संयावः प्रियाः तन्वः संप्रिया हृदयानि वः आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियाः तन्वो मम।**

अग्नि में से दो दर्भकांड जलाकर दाई ओर निर्माल्य पात्र में फेंकिए

निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धा रातिरपाग्रे अग्नि मामादं जहि निष् क्रव्यादं सीधा देव यजनं वह।

प्राणायाम कीजिए

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यं, ॐ तत् सवितुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्, आपो ज्योति रसोमृतम् ब्रह्म भूः, भुवः स्वरोम्। 3 बार

अग्नि को प्रणीतपात्र में से नौ छींटे दीजिए

1. ऋतं त्वा सत्येन परिसमूह्यामि 2 सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि 3 ऋतसत्याभ्यांत्वा परिसमूह्यामि 4 ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि 5 सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि 6 ऋतसत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि 7 ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि 8 सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि 9 ऋतसत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि।

अग्नि के चारों ओर एक–एक दर्भकांड छोडिए

यज्ञस्य सन्ततिर् असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि।

पहले पूर्व की ओर– **पुरस्तात्**

दक्षिण की ओर – **दक्षिणत:**

उत्तर की ओर – **उत्तरत:**

पश्चिम की ओर – **पश्चात् इति स्तरै:।**

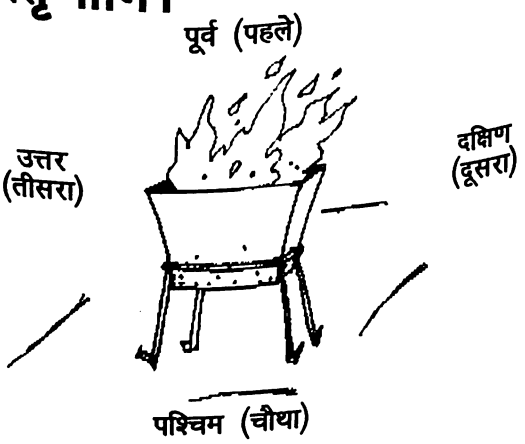

अग्नि को प्रणाम करें

ज्वाला मण्डितम् आकाशं साक्षमाला कमण्डलुम्,
त्रिनेत्रं पंचवक्त्रं च होमकाले तु चिन्तयेत्।
शुक पृष्ठ गतं देवं शक्ति हस्तं चतुर्भुजम्,
मृगाजिनेन सन्नद्धं पुष्पवर्णं हुताशनम्।।

अग्नि में तिलक और फूल डालिए

अग्नये वैश्वानराय, शुकारूढ़ाय, स्वाहासहिताय, पावकाय, त्रिनेत्राय, तेजोरूपाय, शक्ति हस्ताय,समालभनं गन्धो नम:, अर्घो नम:,पुष्पं नम:।

दो दर्भकांड अग्नि में से जलाकर वैश्वदेव के लिए पकाई रोटियों पर रखकर उन्हें थोड़ा घी भी लगाएं

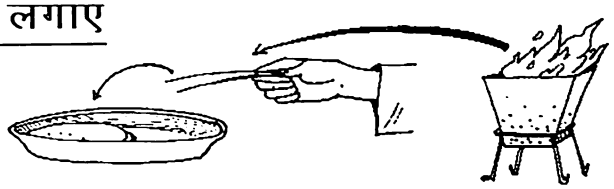

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोऽग्रस्य अन्नस्य जुहोति पाकस्य घृतेन संलिप्य यजमानाय स्वस्त्यस्तु श्रृतम् अभिघार्य।

अब उनके छोटे–छोटे टुकड़े काटकर अग्नि में आहुति के लिए तैयार रखें

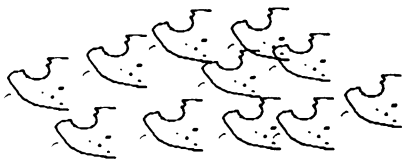

पहला टुकडा अग्नि में उत्तर की ओर डालिए

अग्नये स्वाहा

फिर दूसरा टुकड़ा अग्नि में दक्षिण की ओर डालिए

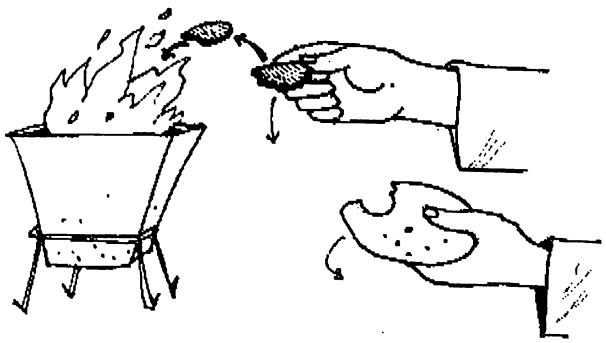

सोमाय स्वाहा

अब अग्नि के मध्य में एक–एक टुकडा डालते रहिए

मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, धान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, वासुदेवाय स्वाहा, सङ्कर्षणाय स्वाहा, प्रद्युम्नाय स्वाहा, अनिरुद्धाय स्वाहा, सत्याय स्वाहा, उपुरुषाय स्वाहा अच्युताय स्वाहा, माधवाय स्वाहा, गोविन्दाय स्वाहा, गोपालाय स्वाहा, सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय स्वाहा।

अब इनमें से तीन टुकड़े नैवेद्य के लिये हाथ में रखें

सावित्राणि, सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो बाहुभ्यां पूष्णोः हस्ताभ्यां आदधे। वैश्वदेव पूर्वकं शिवरात्रियाग देवताभ्यः ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

इन नैवेद्य के टुकडों को किसी अलग कटोरी में रखें और बाद में सर्वसाधारण नैवेद्य के साथ मिलायें। अब नैवेद्य की थाली को सब परिवार जनों के समेत हाथ से थाम ले और घण्टा भी बजाते रहिए। नैवेद्यथाली में किसी पात्र में नारिलय काजू बदाम गिरी किशमिश, सब्ज इलायची भी रखें, पूजा की समाप्ति पर इसे परिवार जनों में बांटिए।

नैवेद्य मंत्र

अमृतेशमुद्रया अमृतीकृत्य अमृतं अस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्रणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः बाहुभ्यां पूष्णोः हस्ताभ्यां आदधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्म विष्णु महेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रियासहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै शिवरात्र्यै पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय आग्नेये भूतबलेभ्यःदक्षिणे अग्निवेतालराजाय नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालाय वायवे मंगल राजाय उत्तरे योगिनीबलेभ्यः ईशाने विष्वक्सेनाय ऊर्ध्वे जयक्सेनाय पाताले तेजाय मध्ये चण्डाय समस्त

शिवरात्रि देवताभ्यः भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय गोपालाय सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय, ईशानाय देवाय ईश्वराय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय, हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुंदर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै। अभयंकरी देव्यै क्षेमंकरीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय। इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैर्ऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायव्ये ध्वजहस्ताय कुबेराय गदाहस्ताय ईशानाय त्रिशूल हस्ताय ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय अनन्तादिभ्यः अष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः। अग्न्यादित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्याम् विष्णु बुधाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां सरस्वतीशुक्राभ्यां प्रजापतिशनैश्चराभ्यां गणपतिराहुभ्यां रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पंच चत्वारिंशत् वास्तोष्पतिदेवताभ्यः। ब्राह्म्यादिभ्यः मातृभ्य : गौर्यादिभ्यो

मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्र गणेश देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवाली देवताभ्यः यामी देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः वारुणी देवताभ्यः बार्हस्पत्य देवताभ्यः ॐ भूः देवताभ्यः ॐ भुवः देवताभ्यः ॐ स्वः देवताभ्यः ॐ भूः भुवः स्वः देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्ड याग देवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरुकादिभ्यः वटुकादिभ्यः।

उत्पन्नम् अमृतं दिव्यं प्राक् क्षीरो दधि मन्थनात्।
अन्नम् अमृत रूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।
देवी प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातः जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वं ईश्वरी देवि चराचरस्य।।
तत् सत् ब्रह्म् अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुणमासस्य
कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां या त्रयोदश्यां अमुकवासरान्वितायां

वार का नाम लेकर

श्री वटुकदेवता संतोषणार्थं शुभफल प्राप्त्यर्थं
ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

नैवेद्यं मंत्र समाप्त

अब अन्नकण रखने हैं

रोटी के 36 टुकड़े पहले ही काट कर तैयार रखे फिर दर्भ के तीन तिनके अग्नि के पास दाईं ओर भूमि पर बिछा कर पुस्तक में वर्णित विधि के अनुसार अन्नकणों को नं0 एक से रखना आरंभ करें।

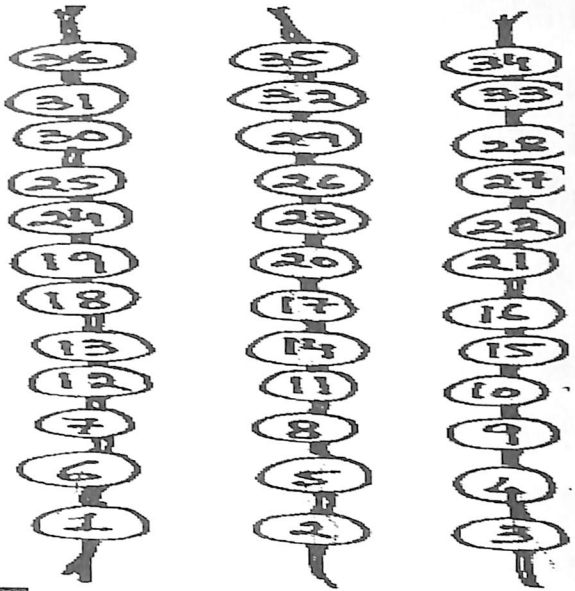

1. तक्षाय नमः
2. उपतक्षाय नमः
3. अम्बा नामासि नमस्ते
4 .दुला नामासि नमस्ते
5. नितंत्री नामासि नमस्ते
6. चुपनीका नामासि नमस्ते
7. अभ्रयन्ती नामासि नमस्ते
8. मेघयन्ती नामासि नमस्ते
9. वर्षयन्ती नामासि नमस्ते
10. नन्दिनी नमस्ते
11. सुभगे नमस्ते
12. सुमङ्गलि नमस्ते
13. भद्रङ्करि नमस्ते
14. श्रियै हिरण्यकेश्यै नमः
15. वनस्पतिभ्यो नमः
16 धर्माय नमः
17. अधर्माय नमः
18. मृत्यवे नमः
19. मरुत्भ्यो नमः
20. वरुणाय नमः
21. विष्णवे नमः
22. वैश्रवणायराज्ञे नमः
23. भूतेभ्यो नमः
24. इन्द्राय नमः
25. इन्द्रपुरुषेभ्यो नमः
26. यमाय नमः
27. यमपुरुषेभ्यो नमः
28. सोमाय नमः
29. सोमपुरुषेभ्यो नमः
30. वरुणाय नमः
31. वरुणपुरुषेभ्यो नमः
32. ब्रह्मणे नमः
33. ब्रह्म पुरुषेभ्यो नमः
34. ऊर्ध्वं आकाशाय नमः
35. स्थण्डिले दिवञ्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः
36. नक्तं चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः

सब पर थोडा सा जल छिड़कें

तक्षादिभ्यः षट्त्रिंशद् देवताभ्यः आचमनीयं नमः।

अब सब पितरों के नाम अन्नकण रखने हैं। बायं जन्यू रखकर देव अन्नकणों के नीचे अपनी दाई ओर दर्भ के चार तिनके जिनका सिर दक्षिण की ओर हो भूमि पर बिछावे उन पर तिल और पानी छिड़कें

इसी बिछाई हुई दर्भ को अंगूठे से स्पर्श करते हुये पढें–

उशन् तस् त्वा हवामह उशन्
तः समिधीमहि, उशन नुशत
आवह पितृन् हविषे अत्तवे।
दर्भास्तरणे तिलोदकेन
अवनेजनं स्वधा

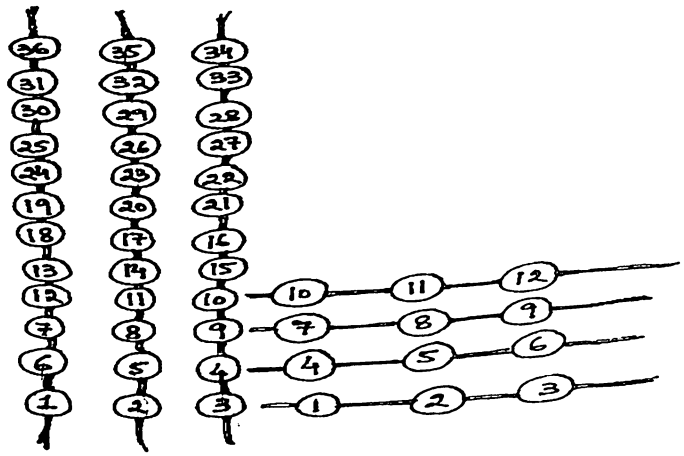

रोटियों के टुकड़ों पर दूध, दही, तिल, पानी, शहर और घी मिलायें, फिर बायें घुटने को जमीन पर रखकर एक टुकड़ा दाएं हाथ में रखें

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यं एव भवन्त्विह।। 3 बार पढ़े
तत–सत्–ब्रह्म–अद्य–तावत्–तिथौ अद्य फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां / त्रयोदश्यां

वार का नाम

पिता जी का नाम गोत्र समेत लेकर इस टुकड़े को नं 1 पर रखिए

पिता एतत् ते अन्नं ये च त्वाऽनु

दादाजी का नाम लेकर नं 2 पर रखें

पितामह एतत्तेऽन्नं ये च त्वाऽनु

परदादा का नाम लेकर नं 3पर रखें

प्रपितामह एतत्तेऽन्नं ये च त्वाऽनु

अब इसी प्रकार तीन तीन की पंक्ति बनाते जाइए

माता जी का नाम लेकर दूसरी पंक्ति में नं0 4 पर रखें

माता एतत्तेऽन्नं या चत्वाऽनु

दादी का नाम लेकर दूसरी पंक्ति में नं0 5 पर रखें

पितामही एतत्तेऽन्नं या चत्वाऽनु

परदादी का नाम लेकर दूसरी पंक्ति में नं0 6 पर रखें।

प्रपितामही एतत्तेऽन्नं या चत्वाऽनु

नाना जी का नाम लेकर तीसरी पंक्ति में नं0 7 पर रखें।

मातामह एतत्तेऽन्नं ये चत्वाऽनु

परनाना का नाम लेकर तीसरी पंक्ति में नं0 8 पर रखें

प्रमातामह एतत्तेऽन्नं ये चत्वाऽनु

परपड़ नाना का नाम लेकर तीसरी पंक्ति में नं0 9 पर रखें

वृद्धप्रमातामह एतत्तेऽन्नं ये चत्वाऽनु

नानी का नाम लेकर चौथी पंक्ति में नं0 10 पर रखें

मातामही एतत्तेऽन्नं या च त्वाऽनु

परनानी का नाम लेकर चौथी पंक्ति में नं0 11 पर रखें

प्रमातामही एतत्तेऽन्नं या चत्वाऽनु

पर पड़नानी का नाम लेकर चौथी पंक्ति में नं0 12 पर रखें

वृद्ध प्रमातामही एतत्तेऽन्नं या चत्वाऽनु

इसी प्रकार अन्य सम्बन्धियों के भी गोत्रा समेत नाम लेकर अष्टाङ्ग अन्न से संतृप्त करें और अन्त में शेष बचे टुकड़े वहीं छोड़कर हाथ धे लें

समस्तमातापितृभ्यो द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यः अन्नं स्वधा।

पवित्र निकाल कर फिर अंगूठे से सब अन्नकणों पर चन्दन का तिलक लगाइए

समस्तमाता पितृभ्यः समालभनं गन्धः स्वधा।

हाथ धोकर पवित्र घारण कर अर्घ–पुष्प लगाए

अर्घः स्वधा पुष्पं स्वधा।

थोड़ा सा जल निर्माल्यपात्र में डालिए

दीपः स्वधा धूपः स्वधा।

फलमूल आदि पितर अन्नकणों पर रखें

समस्तमाता पितृभ्यः भक्ष्य भोज्य फल मूल बलि नैवेद्यं आहारादि अन्नं स्वधा।

फिर तिल और शहद पानी की कवल में मिलाकर अन्नकणों के सामने आचमन रखें

समस्तमाता पितृभ्यः तिलमधुमिश्रं उदकपात्रं आचमनीयं जलं स्वधा।

अन्त में दूध, दही, शहद, चावल और तिल जल में मिलाकर सब का निर्माल्य पात्रा में तर्पण करें

समस्तमातापितृभ्यः हिमपानं स्वधा, क्षीरपानं स्वधा, मधुपानं स्वधा, तिलोदकं स्वधा, उदकतर्पणं स्वधा, हिमम्–हिमम्–रजतम्–रजतम्।

दायां जन्यू करके फिर तर्पण करें

वसन्ताय नमः, ग्रीष्माय नमः, वर्षाभ्यो नमः, शरदे नमः, हेमन्ताय नमः, शिशिराय नमः, षड्ऋतुभ्यो नमः।

अब रोटी का एक टुकडा अग्नि में डालिए (ईशान कोण पर)

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।

दोनों हाथ धोकर प्राणायाम करें

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यं, ॐ तत् सवितुः वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्ॐ आपो ज्योति रसोमृतम् ब्रह्म भूः भुवः स्वरोम् - 3

प्रणीतपात्रा में से अग्नि को तीन बार जल की छींटें दे

1. **ऋतं त्वा सत्येन विमुञ्चामि**
2. **सत्यं त्वर्तेन विमुञ्चामि**
3. **ऋतसत्याभ्यां त्वा विमुञ्चामि**

अग्नि के चारों ओर पहले बिछाये दर्भ के चार तिनके उठाकर वापिस अग्नि में डालिए

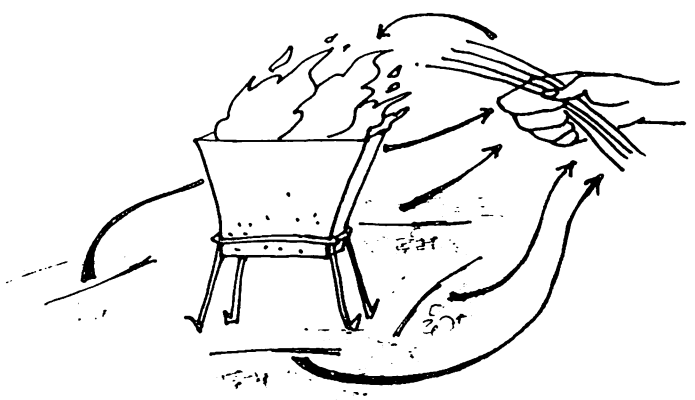

यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि।

अग्नि में फूल डालिए

1. **धर्मं देहि धनं देहि पुत्र पौत्रांश्च देहि मे।**
   आयुः आरोग्यं ऐश्वर्यं देहि मे हव्य वाहन।।

2. **भक्तिं देहि श्रियं देहि सुखं देहि स्वतन्त्रताम्।**
   देहि भोगं च मोक्षं च मनोभिलषितं मम।।

3. **गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ब्रह्मविष्णु महेश्वराः।**
   यत्र देवालयाः सर्वे तत्र गच्छ हुताशन।।

अग्नि की ज्योति दोनों हाथों से अपने में समा लीजिए

तेजोसि तेजो मयि देहि।

पृथ्वी पर रोटी का एक टुकडा यक्ष्म रोगराज को बलि दीजिए

भगवन् यक्ष्म एतत् ते अन्नं नमः।

थोडा सा पानी डालिए

एतत्ते आचमनीयं नमः।

कंठोपवीती –

गले में जन्यू रखकर सनकादि ऋषियों को रोटी के चार टुकडे, हथेली से दीजिए

सनकादिभ्यः ऋषिभ्यः अन्नं नमः।

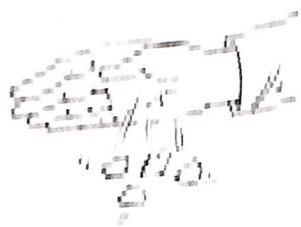

थोड़ा जल डालिए

सनकादिभ्यः ऋषिभ्यः आचमनीयं नमः।

यज्ञोपवीत दायें कीजिए **सव्येन**

तीसरे पात्र में रखे व्यंजन समेत अन्न कश्मीरी भाषा (चुटू) को हाथ लगाए

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा।
खेचरी भूचरी रामाः तुष्टाः भवंतु मे सदा।।
आकाशमातृभ्यः अन्नं नमः।

अंगूठे से इस अन्न के भाग को सिन्दूर का तिलक लगाए

आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

हाथ धोकर अर्घपुष्प लगाए

आकाशमातृभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

अब इसी थाली में पहले से ही रखे अन्न से अन्य जीवों को भी किसी दूसरे पात्र में बलि देते रहें, (इसे "गोग्रास" कहते हैं)

सौरभेय्याः (स्वर्गहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस् त्रैलोक्य मातरः।।
गोभ्यः अन्नं नमः।

ऐद्र वारुण वायव्या याम्या नैर्ऋतिकाश्च ये।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु इमं पिण्डं मयो द्धृतम्।।
काकेभ्यः अन्नं नमः।

श्वानौ द्वौ शाव शवलौ वैवस्वत कुलोद् भवौ।
ताभ्यां पिण्डं प्रदास्यामि स्याताम् एतौ अहिंसकौ।।
श्वभ्यः श्वानकेभ्यो अन्नं नमः।

बायां जन्यू करिए और बलि देते रहें

रौरवाधीन सत्वानां प्रेतद्वार निवासिनाम्।
अर्थिनां याचमानानाम् अक्षय्यम् उपतिष्ठठतु।।

दायां जन्यू करिए और बलि देते रहें

शुनाम् च पतितानाम् च श्वपचाम् पाप रोगिणाम्।
वायसानां क्रिमीणाम् च शनकैः निक्षिपेत् भुवि।।
देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षो रगदैत्य संघाः।
प्रेताः पिशाचाः तरवः समस्ता ये चान्नम् इच्छन्ति मया प्रदत्तम्।।
पिपीलिकाः कीट पतंग काद्याः बुभुक्षिताः कर्मणि बद्ध बद्धाः।
प्रयान्तु ते तृप्तिम् इदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टम् सुखिनो भवन्तु।।
येषाम् न माता न पिता न बन्धुः नैवान्न सिद्धि न तथान्नं अस्ति।
तत् तृप्तयेन्नं भुवि दत्तम् एतत् ते यान्तु तृप्तिम् मुदिता भवंतु।।
भूतानि सर्वाणि तथान्नम् एतत् अयं चरिष्णुः न ततोन्यत् अस्ति।
तस्मात् अहं भूत निकाय भूतम् अन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्।।
चतुर्दशो भूत गणो य एष तत्र स्थिता ये अखिल भूतसंघाः।
तृप्त्यर्थम् अन्नं हि मया विसृष्टम् तेषाम् इदम् ते मुदिता भवंतु।।
इत्युत् चार्य नरो दद्यात् अन्नं श्रद्धा समन्वितः।
भुवि भूतोपकाराय गृही सर्वाश्रयो यतः।।

बायां जन्यू करिए और बलि देते रहें

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वप्राण हराय च।।
औदुम्बराय नीलाय ब्रध्नाय परमेठिने।
वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः।।
पाशहस्त कृतान्ताय प्रेताधिपतये नमः।।

हाथ धोकर दायां जन्यू करिए

सव्येन

यवैश्वदेव समाप्त

वटुकनाथ तथा अन्य भैरवों को बलि अर्पण करना

वटुक में अन्न डालने के लिए पवित्र बाहर निकालें। डुलू के लिए पहले रखी गई चौथी थाली को लाकर जिसमें अपनी कुल रीति के अनुसार सब प्रकार के व्यंजन, पकवान मिलाकर उस पर हाथ से अर्घ और पानी डालकर वटुकनाथ को निम्न मंत्र से बलि देते रहे।

ये विश्वभाविनो भूता ये च तेष्वऽनुयायिनः।
आहरन्तु बलिं तुष्टाः प्रयच्छन्तु शिवं मम।।

अब इस अन्न का एक ग्रास (कौर) हाथ में उठाकर निम्न मंत्रो से वटुकनाथ को बलि देते रहिए यहां मांसहारी व शाकाहारी के लिए डुलू में डालने के लिए अगल अगल मन्त्र हैं। मांसाहारी इन मंत्रो से अन्न डुलू मे डाले। और शाकाहारी नीचे दिये हुए मंत्र से बलि दे

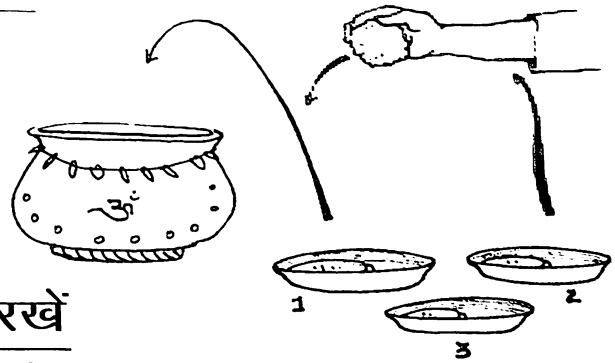

1. पहला ग्रास हाथ में रखें

मांसहारी : **पाशाङ्कुशौ डमरकाद्य युतौ वहन्तं शुक्लं तथैव वदनं परिनृत्य मानम्। दक्षाननं त्रियनं शशिखण्ड चूडं ध्यात्वाऽर्चये वटुकं इन्द्रदिशि स्फुरन्तम्।। ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न पिशितादि क्षेत्रपाल बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट् पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः।**

शाकाहारी : **पाशाङ्कुशौ डमरकाद्य युतौ वहन्तं शुक्लं तथैव वदनं परिनृत्य मानम्। दक्षाननं त्रियनं शशिखण्ड चूडं ध्यात्वाऽर्चये वटुकं इन्द्रदिशि स्फुरन्तम्।। ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः**

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

2. दूसरा कौर हाथ में रखें

मांसहारी : **भूत बल गणं पूज्यं आग्नेये विघ्ननाशनम्।**
हसन्तं त्रिमुखं ध्यात्वार्चयेऽहं बलिना विभुम्।।
ॐ ह्रीं श्रीं भैंभूतबल भैरव आगच्छ आगच्छ सुगन्ध पुष्प
दीप धूपान्न पिशितादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट् आग्नेये भूतबलेभ्यो नमः।

शाकाहारी : **भूत बल गणं पूज्यं आग्नेये विघ्ननाशनम्।**
हसन्तं त्रिमुखं ध्यात्वार्चयेऽहं बलिना विभुम्।।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

3. तीसरा कौर हाथ में रखें

मांसहारी : **ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं भुजगपति महा भीषणं मुण्डमालां,**
दैवीं कर्त्रीं कपालं डमरं अथ महा घोरशूलं दधानम्।
वीणां वाद्य प्रवीणां उरसि विनिहितां वादयन्तं भुजाभ्याम्,
वन्दे वेतालं उद्यद् दिनकर सदृशं नाट्य लग्नं हसन्तम्।।
ॐ ह्रीं श्रीं कपिल जटाजूट भार भास्वर अग्निवेताल भैरव एहि
अन्नमांसादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट् दक्षिण अग्निवेतालराजाय नमः।।

शाकाहारी : **ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं भुजगपति महा भीषणं मुण्डमालां,**
दैवीं कर्त्रीं कपालं डमरं अथ महा घोरशूलं दधानम्।
वीणां वाद्य प्रवीणां उरसि विनिहितां वादयन्तं भुजाभ्याम्,
वन्दे वेतालं उद्यद् दिनकर सदृशं नाट्य लग्नं हसन्तम्।।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

4. चौथा कौर हाथ में रखें

मांसहारी : **नैर्ऋते दिशि विभुं च वेदबाहुं अमरेश वन्दितम्।**
भक्त वत्सलं अजं दयापरं तं नमामि बहुखातकेश्वरम्।
ॐ ह्रीं श्रीं बहुखातकेश्वर भैरव आगच्छ आगच्छ सुगन्ध पुष्प दीप धूप अन्न मांस रक्तादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट् नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय नमः।

शाकाहारी : **नैर्ऋते दिशि विभुं च वेदबाहुं अमरेश वन्दितम्।**
भक्त वत्सलं अजं दयापरं तं नमामि बहुखातकेश्वरम्।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युक्त गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

5. पांचवा कौर हाथ में रखें

मांसहारी : **स्थानेशः चतुरास्य षट्भुज महा भीम स्वभावः करैः,**
बिभ्राणः चषकाब्ज मुण्ड परशून् खट्वाङ्ग काद्याङ् कुशान्।
मुद्रा स्वस्तिक ताण्डवीं असिं अथो प्रेतासनस्थोऽन्वहं,
वारुण्यां सुदिस्थितो बलयुतो ध्येयः स्वभक्तार्तिहा।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्षां स्थानक्षेत्रपाल भैरव आयाहि
भक्ष्य भोज्य अन्न पिशितादि बलिं गृह्ण गृह्ण
वौषट् पश्चिमे स्थान क्षेत्रपालाय नमः।

शाकाहारी : **स्थानेशः चतुरास्य षट्भुज महा भीम स्वभावः करैः,**
बिभ्राणः चषकाब्ज मुण्ड परशून् खट्वाङ्ग काद्याङ् कुशान्।
मुद्रा स्वस्तिक ताण्डवीं असिं अथो प्रेतासनस्थोऽन्वहं,
वारुण्यां सुदिस्थितो बलयुतो ध्येयः स्वभक्तार्तिहा।।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युक्त गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

6. छठा कौर हाथ में रखें

मांसहारी : एक द्वि त्रि चतुर् मुखैः दशचतुः षष्टचैक दोर्भिः क्वचित्,
नानाघोर वरायुधैः त्रिभुवने ख्यातैः सदा स्थानतः।
भूतैः ताण्डव मण्डितैः प्रकुपितैः हर्षा न्वितैश् चार्षितो,
वायव्यां दिशि मंगलेश्वर इति ख्यातोऽस्तु सौरव्य प्रदः।।
ॐ ह्रीं श्रीं मां मंगलेश्वर भैरव आगच्छ आगच्छ सुगन्धि पुष्प दीप धूप अन्न पिशितादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट् वायव्ये मंगलराजाय नमः।

शाकाहारी : एक द्वि त्रि चतुर् मुखैः दशचतुः षष्टचैक दोर्भिः क्वचित्,
नानाघोर वरायुधैः त्रिभुवने ख्यातैः सदा स्थानतः।
भूतैः ताण्डव मण्डितैः प्रकुपितैः हर्षा न्वितैश् चार्षितो,
वायव्यां दिशि मंगलेश्वर इति ख्यातोऽस्तु सौरव्य प्रदः।।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

7. सातवां कौर हाथ में रखें

मांसहारी : भूपाताल खंदक् प्रचार निरता एक द्वि पञ्चानना,
नानावर्ण धराः चतुर् द्वि नवषट् दोर् दण्ड हेत्यन्विताः।
उष्ट्र श्वाश्व सृगाल वायस मुखीः कौवीर दिक् संस्थिता,
देवी स्वामिभिर् अर्चये त्वनुगता भक्तार्ति विध्वंसिनी।।
ॐ ह्रीं श्रीं हस रक्ष मल वयऊं योगिनी बलगण आगच्छ आगच्छ सुगन्धि पुष्प दीप धूप अन्न पिशितादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट्। उत्तरे योगिनी बलेभ्यो नमः।

शाकाहारी : भूपाताल खंदक् प्रचार निरता एक द्वि पञ्चानना,
नानावर्ण धराः चतुर् द्वि नवषट् दोर् दण्ड हेत्यन्विताः।
उष्ट्र श्वाश्व सृगाल वायस मुखीः कौवीर दिक् संस्थिता,
देवी स्वामिभिर् अर्चये त्वनुगता भक्तार्ति विध्वंसिनी।।

ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

8. आठवां कौर हाथ में रखें

मांसहारी : **श्यामवर्णं तु द्विभुजं विष्णोर् अनुचरं नमः।**
उपवीतिनम् ईशाने विश्वक्सेनं महाबलम्।।
ॐ ह्रीं रीं विश्वक्सेन भैरव आगच्छ आगच्छ सुगन्धि पुष्प
दीप धूप अन्न व्यञ्जनादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट्।
ईशाने विश्वक्सेनाय नमः।

शाकाहारी : **श्यामवर्णं तु द्विभुजं विष्णोर् अनुचरं नमः।**
उपवीतिनम् ईशाने विश्वक्सेनं महाबलम्।।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

9. नवां कौर हाथ में रखें

मांसहारी : **मंगलादित्यं अदैन्यं नाना मंगल भूषितम्।**
जयक्सेनं अहं ऊर्द्ध्वे वन्दे क्षेत्रेश्वरं विभुम्।।
ॐ ह्रीं श्रीं जयक्सेन भैरव आगच्छ आगच्छ सुगन्धि पुष्प दीप धूप
अन्न पिशितादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट्। ऊर्ध्वे
जयक्सेनाय नमः।

शाकाहारी : **मंगलादित्यं अदैन्यं नाना मंगल भूषितम्।**
जयक्सेनं अहं ऊर्द्ध्वे वन्दे क्षेत्रेश्वरं विभुम्।।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प

दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

10. दसवां कौर हाथ में रखें

मांसहारी : कपाल माला भरणं आनन्द मद घूर्णितम्।
कल्पान्त मेघ सदृशं श्रीतेजेशं नमोस्त्वधः।।
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीतेज भैरव आगच्छ आगच्छ नाना विध
भक्ष्यभोज्यादि बलिं गृह्ण गृह्ण वौषट्। पाताले तेजाय नमः

शाकाहारी : कपाल माला भरणं आनन्द मद घूर्णितम्।
कल्पान्त मेघ सदृशं श्रीतेजेशं नमोस्त्वधः।।
ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युकृ गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को डुलू में डालिए)

11. ग्यारहवां कौर हाथ में रखें

मांसहारी : मध्ये राष्ट्र पतिं दशार्ध वदनं शून्यैक बाहुं महा,
प्रेतस्थं तिथिलोचनं गणपतिं श्रीचण्डं अष्टेष्टदम्।
नानावर्णं सुवर्णं विग्रहरुचिं खट्वाङ्ग काद्या ङ्कुशं,
पाशासि स्फुरन् मुण्ड शूल डमरू घण्टाधारं भावये।।
ॐ ह्रीं श्रीं चण्ड भैरव आगच्छ आगच्छ सुगन्धि पुष्पदीप धूप
अन्न भक्ष्यभोज्यादि गृह्ण गृह्ण वौषट् मध्ये चण्डाय नमः

शाकाहारी : मध्ये राष्ट्र पतिं दशार्ध वदनं शून्यैक बाहुं महा,
प्रेतस्थं तिथिलोचनं गणपतिं श्रीचण्डं अष्टेष्टदम्।
नानावर्णं सुवर्णं विग्रहरुचिं खट्वाङ्ग काद्या ङ्कुशं,
पाशासि स्फुरन् मुण्ड शूल डमरू घण्टाधारं भावये।।

ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथ भैरव आगच्छ आगच्छ रक्ष रक्ष सुगन्धि पुष्प दीप धूपान्न नानाविध व्यजादि युक्तं गृहण ग्रहण वौषर वौषर पूर्वे वटुकनाथ भैरवाय नमः

(अब इस ग्रास को क्षेत्रपालों में डालिए)

अब इस ग्रास को दूसरे क्षेत्रपालों में डालिए

क्षां क्षेत्र पतिभ्यो बलिं नमः। रां राष्ट्रपतिभ्यो बलिं नमः।
सर्वे अभयवरप्रदा मह्यं पुष्टिं पुष्टिपतयो ददतु।।

हाथ धोकर बायां जन्यू करें और पवित्र धारण करें, फिर पितरों के अन्नकणों पर अर्घपुष्प डालिए

1. **आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षौ सुखानि च।**
   प्रयच्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः।।

2. **एष पिण्डो मया दत्तः तव हस्ते जनार्दन।**
   गयायां पितृरूपेण स्वयं एवोप गृह्यताम्।।

3. **आत्मनः चार्थलाभाय क्षेमाय विजयाय च।**
   शत्रूणां बुद्धिनाशाय पितृन् उद्धरणाय च।।

4. **पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशम् एकं गयाशिला।**
   यत्र तत्र स्मरेत् नित्यं पितृणां दत्तम् अक्षय्यम्।।

दायां जन्यू करें पानी में थोडा
जौ मिलाकर तर्पण करें

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः
उदकतर्पणं नमः।

कलश पर फूल लगाते जाइए

1. आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे।
शरीरयात्र सिद्ध्यर्थ भगवन् क्षन्तुं अर्हसि।।

2. आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा।
भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।।

शिवलिंग पर अर्घपुष्प चढ़ाएं

1. पूजितोसि मया भक्त्या भगवन् गिरिजापते।
सगौरीको मम स्वान्तं विश विश्रान्ति हेतवे।।

2. आत्मा त्वं गिरिजापति सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधिः स्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यत् यत् कर्म करोमि तत् तत् अखिलं शम्भो तवाराधनम्।।

3. करचरणकृतं वाक् कायजं कर्मजं वा,
श्रवण नयनजं वा मानसं वा अपराधम्,
विदितं अविदितं वा सर्वम् एतत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

वटुकदेव को पुष्प

1 पुष्पाणि सन्तु तव देव मत् इन्द्रियाणि,
धूपो गुरुर् वपुर् इदं हृदयं प्रदीपः।
प्राणा हवींषि करणानि नवाक्षताः ते,
पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतं एष जीवः।।

2 वांछामि नाहं अपि सर्वरसाधिपत्यं,
नेच्छे पुरन्दर पुरं न पुरं विधातुः।

भूयो भवामि यदि जन्मनि जन्मनि स्याम्,
त्वत् पाद पंकजलसत् मकरन्द भृङ्गः।।

3 **जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि,**
माया च मे विशतु चित्तं अबोधहेतुः।
किंच क्षणार्धं अपि त्वत् चरणारविन्दात्,
माऽपैतु मे हृदयं ईश नमो नमस्ते।।

क्षेत्रपालों को केवल अर्घ

क्षमध्वं मम क्षेत्रेशा ददध्वं सुखसम्पदः।
खगोपाताल दिक् संस्थाः तुष्टा यान्तु स्वकं पदम्।।

फिर कलश को फूल

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।
पूजाभागं न जानामि क्षभ्यतां परमेश्वर।।

अष्टांग प्रणाम कीजिए

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः

तर्पण कीजिए पानी की धरा निर्माल्य पात्राा में डालिए।

नमो ब्रह्मणे। नमो अस्त्वग्नये। नमः पृथिव्यै। नमो ओषधीभ्यः। नमो वाचे। नमो वाचस्पतये। नमो विष्णवे बृहते कृणोमि । इत्येतासां एव देवतानां। साभीप्यं सारिष्टतां। सलोकतां आप्नोति। य एवं विद्वान् स्वाध्यायं अधीते।।

वटुक पूजा समाप्त

नोट : सायं को भोजन करने के पश्चात् अन्नकण, डुल्लू में डाला अन्न आदि बाहर छोडिए। निर्माल्य, अर्घफल किसी वृक्ष के नीचे डालियें । 'चुटू' आदि को छत पर रखें। शेष विसर्जन 'डून्य अमावसी' के दिन उठाए।

अमावसी (डूनि मावस) की पूजाविधिजि

सब से पहले धूपदीप जलाकर रखिए। कलशपात्र, वटुक, भैरवपात्रो तथा क्षेत्रपालों से कुछ अखरोट निकालकर उनको तोड़कर गिरियां तथा चावल के आटे की रोटियां (तुमुल चोच्यवरि) किसी पात्र में रखिए। दूसरे किसी पात्र में 'चोट क्षेत्रपाल' के लिए एक पूरी रोटी तथा रोटी के सात टुकड़ें रखें। सब रोटियों पर एक एक गिरी रखें। अर्घ पुष्प, टीका (सिन्दूर) पवित्र तथा जल तैयार रखें। सर्वप्रथम घूपदीप करें।

कटोरी से निर्माल्यपात्र में पानी डालते रहें

ॐ अस्य श्री आसन शोधनमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः।

हाथ जोड़कर धरती माता को प्रणाम करके अपने आसन पर जल छिड़के

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।

पृथ्वी को दो दर्भकांड आसन रखिए

ध्रुवा द्यौर् ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम् इदम् जगत् ध्रुवो राजा विशाम् असि

पृथ्वी को तिलक तथा अर्घपुष्प लगाएं

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

हाथ धोकर नमस्कार करे

1. **शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।**
   प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप शान्तये।।
2. **अभिप्रेतार्थ सिद्धयर्थम् पूजितो यः सुरैरपि।**
   सर्वविघ्न च्छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः।।
3. **लाभस् तेषां जयस् तेषां कृतस् तेषां पराजयः।**
   येषाम् इन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

4. **महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि।**
त्रीहि मां देवि दुष् प्रेक्ष्ये शत्रूणां भय विवर्द्धिनि।।

5. **कर्पूरगौरें करुणावतारम् संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।**
सदा वसन्तं हृदयाविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

6. **गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः साक्षात् महेश्वरः।**
गुरुर् एव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरवे नमः।।
गुरवे नमः, परम गुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आद्यसिद्धेभ्यो नमः।

न्यास करें

नाभि को हाथों से छूले — **अ नाभौ**

दोनों हाथ हृदय पर रखे — **यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः।**

दोनों हाथों से सिर को स्पर्श करें — **यो अप्सु य ओषधीषु शिरसे स्वाहा।**

शिखा को अंगूठे से स्पर्श करें — **यो वनस्पतिषु शिखायै वौषट्**

दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कंधो का और बायें हाथ की अंगुलियों से दायें कन्धे का स्पर्श करें

यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश कवचाय हुं।

नेत्रें को स्पर्श करें — **तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट्।**

दायें हाथ को सिर के ऊपर से बाई ओर घुमाकर मध्यमा और तर्जनी से बाई हथेली पर ताली बजायें

नमो अस्तु देवाः अस्त्राय फट्।

अपने चारों ओर तिल फेंकें

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

प्राणायाम करें

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्–3

अपने पैर और मुंह को पानी की छीटें दें

तीर्थे स्नेयम् तीर्थम् एव समानानाम् भवति मानः शंस्यो अरुरुषो घूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

पवित्र धाारण करें

वसोः पवित्रम् असि शतधाारम् वसूनां पवित्रम् असि।
सहस्रधाारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवंति।

अपने आपको तिलक लगाएं

स्वात्मने शिव स्वरूपाय समालभनं गन्धो नमः।

हाथ धोकर सिर पर अर्घपुष्प लगाए।

अर्घो नमः पुष्पं नमः।

दीप को तिलक तथा अर्घपुष्प

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरापहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः, दीपाय अर्घो नमः पुष्पं नमः।

धूप को तिलक तथा अर्घपुष्प

वनस् पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत् तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः, अर्घो नमः घूपाय पुष्पं नमः।।

सूरज भगवान को तिलक और पुष्प डालें

नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत - साक्षिणे।
नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः, भस्मराय अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

कटोरी से पानी डालते रहिए

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृत् जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।।
स्वात्मने शिव स्वरूपाय दीप धूप संकल्पात् सिद्धिः अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुण मासस्य (यहाँ पक्ष तिथि और वार का नाम लेना) **महागणपतये, कुमाराय श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः, प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलशदेवताभ्यः, ब्रह्मविष्णु महेश्वर देवताभ्यः, चातुर्वेदेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये, नारायणाय, फाल्गुणे शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्तादिभ्यः, पितृगणयागदेवताभ्यः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, भगवते भवाय देवाय पार्वतीसहिताय**

परमेश्वराय, पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथाय, आग्नेये भूतबलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेताल राजाय, नैर्ऋतये बहुखातकेश्वराय, पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालाय, वायवे मंगलराजाय, उत्तरे योगिनीबलेभ्यः, ईशाने विश्वक्सेनाय, ऊर्ध्वे जयक्सेनाय, पाताले तेजाय, मध्ये चण्डाय, समस्तशिवरात्रीदेवताभ्यः, अभयङ्करी देव्यै, क्षेमङ्करीभवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै इह इह राष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय दीपधूपसंकल्पात् सिद्धिर् अस्तु दीपो नमः धूपो नमः।

अब पहले से तैयार रखे हुए नैवेद्य को हाथ से थाम लें और घंटा भी बजाएं अमृतेशमुद्रया अमृतीकृत्य अमृतं अस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः बाहुभ्यां पूष्णोः हस्ताभ्यां आदधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्यावेदेवताभ्यः प्रजापतये बह्मणे कलश देवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रियासहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः। कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै शिवरात्र्यै पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथाय आग्नेये भूतबलेभ्यः दक्षिणे अग्निवेतालराजाय नैर्ऋते बहुखातकेश्वराय पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालाय वायवे मंगल राजाय उत्तरे योगिनीबलेभ्यः ईशाने विष्वक्सेनाय ऊर्ध्वे जयक्सेनाय पाताले तेजाय मध्ये चण्डाय शिवरात्री देवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय गोपालाय सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय, ईशानाय देवाय ईश्वराय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय, हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। ह्रां ह्री सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुंदर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै। अभयंकरी देव्यै क्षेमंकरीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपतये स्थान भैरवाय। इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैर्ऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायव्ये ध्वजहस्ताय कुबेराय

गदाहस्ताय ईशानाय त्रिशूल हस्ताय ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय अनन्तादिभ्यः अष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः। अग्न्यादित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्याम् विष्णु बुधाभ्यां इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां सरस्वतीशुक्राभ्यां प्रजापतिशनैश्चराभ्यां गणपतिराहुभ्यां रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय धृवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पंच चत्वारिंशत् वास्तोष्पतिदेवताभ्यः । ब्राह्म्यादिभ्यः मातृभ्य : गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्र गणेश देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः वटुकादिभ्यः।

सिनीवाली देवताभ्यः यामी देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः वारुणी देवताभ्यः बार्हस्पत्य देवताभ्यः ॐ भूः देवताभ्यः ॐ भुवः देवताभ्यः ॐ स्वः देवताभ्यः ॐ भूः भुवः स्वः देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्ड याग देवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरुकादिभ्यः वटुकादिभ्यः।

उत्पन्नम् अमृतं दिव्यं प्राक्क्षीरोदधि मन्थनात्।
अन्नम् अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

देवी प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातः जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वं ईश्वरी देवि चराचरस्य।।

तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुणमासस्य
यहां पक्ष तिथि और वार का नाम लेकर

श्री वटुकदेवता संतोषणार्थं शुभफल प्राप्त्यर्थ ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।
'चटू' के लिए रखी पूरी रोटी को हाथ से स्पर्श करें

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा।
खेचरी भूचरी रामाः तुष्टाः भवंतु मे सदा। आकाश मातृभ्यः अन्नं नमः।

इसको अंगूठे से तिलक तथा पुष्प लगाए
आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

हाथ धोकर पहले रोटी के टुकडे को हाथ से स्पर्श करें

भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय अन्नं समर्पयामि नमः।

दूसरे टुकडे को स्पर्श करें

भगवते भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय अन्नं समर्पयामि नमः।

तीसरे टुकडे को स्पर्श करें

भगवते विनायकाय वल्लभासहिताय गणेशाय अन्नं समर्पयामि नमः।

चौथे टुकडे को स्पर्श करें

भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय अन्नं समर्पयामि नमः

पांचवे टुकड़े को स्पर्श करें

इष्टदेव्यै भगवत्यै अन्नं समर्पयामि नमः।

शेष बचे दो टुकड़ों को हाथ से स्पर्श करें

योस्मिन् निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः तेभ्यो निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम्।

अब हाथ में थोड़ा जल और अर्घ रखकर इन दो टुकड़ों पर डालें

क्षां क्षेत्रपतिभ्यो बलिं समर्पयामि नमः। रां राष्ट्रपतिभ्यो बलिं समर्पयामि नमः।

दोनों टुकडे क्षेत्रपालों में डालें

सर्वे अभयवरप्रदा मह्यं पुष्टिं पुष्टिपतयो ददतु

दायें हाथ में अर्घपुष्प समेत दो दर्भकांड रखिए

ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः
ॐ भुवः पुरुषं विसर्जयामि नमः
ॐ स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः
ॐ भूर् भुवः स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः
ॐ भूर् भुवः स्वः तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्-3 बार पढें
तन्महेशाय विद्महे वाक् विशुद्धाय धीमहि तन्नः शिवः प्रचोदयात्-3 बार पढें
ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्राय विद्महे क्षेत्रेशमुख्याय धीमहि। तन्नो वटुकभैरवः प्रचोदयात्-3 बार पढें

तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् -फाल्गुण मासस्य पक्ष, तिथि और वार का नाम लेकर **महागणपतेः कुमारस्य श्रियाः सरस्वत्याः लक्ष्म्याः विश्वकर्मणः द्वार्देवतानां प्रजापतेः ब्रह्मणः कलशदेवतानां ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवतानां चातुर्वेदेश्वरस्य सानुचरस्य ऋतुपतेः नारायणस्य फाल्गुणे शक्तिसहितस्य चक्रिणः क्रियासहितस्य गोविन्दस्य दुर्गायाः त्र्यम्बकस्य वरुणस्य यज्ञपुरुषस्य अग्निष्वात्तादीनां पितृगण देवतानां कालरात्र्याः तालरात्र्याः राज्ञिरात्र्याः शिवरात्रयाः भगवतः भवस्य देवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य पूर्वे ॐ ह्रीं श्रीं देवी-पुत्र वटुकनाथस्य आग्नेये भूतबलानां दक्षिणे अग्निवेतालराजस्य नैर्ऋते बहुस्वातकेश्वरस्य पश्चिमे स्थानक्षेत्रपालस्य वायवे मंगलराजस्य उत्तरे योगिनीबलानां ईशाने विश्वक्सेनस्य ऊर्ध्वे जयक्सेनस्य पाताले तेजस्य मध्ये चण्डस्य समस्तशिवरात्री देवतानां अभयंकरी देव्याः क्षेमंकरी भवान्याः सर्वशत्रुघातिन्याः इह राष्ट्राधिपतेः स्थान भैरवस्य आत्मनो वाङ्मनः**

कायोपार्जित पापनिवारणार्थम् शुभफलप्राप्त्यर्थम् कलशपूजनं शिवरात्री याग पूजनम् अच्छिद्रं सम्पूर्णं अस्तु एवम् अस्तु।

दोनों दर्भकांड निर्माल्यपात्र में डालें

अब थोडा सा जल निर्माल्य में डालें

एताभ्यो देवताभ्यः यवोदकं नमः उदकतर्पणं नमः।

कलश को फूल लगाएं

1. **आज्ञामे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे।**
   शरीरयात्रा सिद्धय्र्थम् भगवन् क्षन्तुम् अर्हसि।।

2. **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा।**
   भगवन् त्वाम् प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।।

3. वटुकदेव पर फूल चढ़ाए

   पुष्पाणि सन्तु तव देव मत् इन्द्रियाणि, धूपो गुरुः वपुर् इदं हृदयं प्रदीपः।
   प्राणा हवींषि करणानि नवाक्षताः ते,
   पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतम् एष जीवः।

4. शिवलिंग पर फूल

करचरणकृतं वाक् कायजं कर्मजं वा, श्रवणनयनजं वा मानसम् वापराधाम्।
विदितम् अविदितम् वा सर्वम् एतत् क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

क्षेत्रपालों को केवल अर्घ डालें

क्षमध्वं मम क्षेत्रेशा ददध्वम् सुखसम्पदः। रवगोपातालदिक् संस्थाः तुष्टा यान्तु स्वकम् पदम्।

फिर से कलश और अन्य देवों को पुष्प चढ़ाए

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्। पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।।

अष्टांग प्रणाम कीजिए

उमाभ्याम् जानुभ्याम् पाणिभ्याम् शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पण करें

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्तु अग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः ओषधीभ्यः। नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि। इत्येतासाम् एव देवतानां, सामीप्यं, सार्ष्टितां, सायुज्यं, सलोकताम्, आप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायम् अधीते।
सहनौ अवतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यम् करवावहै।
तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषावहै
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः जल की छींटे अपने तथा दूसरो के मुंह पर लगाइए
अन्त में कलश तथा वटुकभैरव आदि के कुम्भों (पात्रों) से किसी बर्तन में थोड़ा-2 जल निकालिए और इस से अपने आप तथा सब परिवारजनों को विष्टर से छीटें (कलश लव) दे

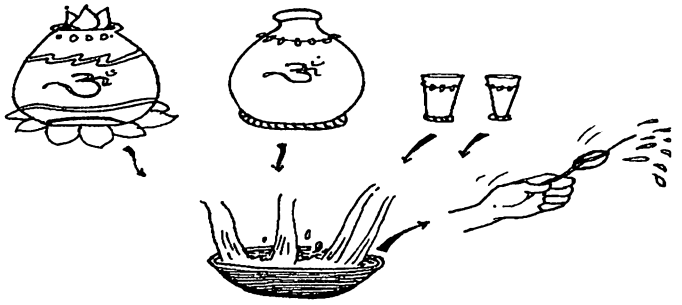

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस् पते देवायन्तस् त्वेमहि, उपप्रयन्तु मारुतः सदानव इन्द्र प्राशून् भवा सचा, अर्यमायातु वृषभस् तु विष्मान् यन्ता वसूनि विधत् ते तनूपाः सहस्राक्षो गोत्रभित् वज्रबाहुः अस्मासु देव द्रविणम् ददातु, ये ते अर्यमन् बहवो देवयानाः पन्थानो राजन् दिव आचरन्ति, तेभिर् नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देवा।

कलशलव के बाद नैवेद्य के रूप में कलश के अखरोट पुष्प समेत सब को दें

मन्त्रार्था: सफला: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा:। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणाम् उदयस्तव / मम आयु: आरोग्यं ऐश्वर्यं एतत् त्रितयं अस्तु ते / मे जीव त्वं / अहम् शरद: शतम्।

नोट इसके पश्चात् कलश एवं वटुक के पात्रों से सारे अखरोट निकाल कर अलग कर रख लें तथा इनमें पहले से रखा जल, फूल, मौली घास की आरियों आदि को किसी वृक्ष के नीचे या नदी में प्रवाहित करें

ॐ शान्ति

इति विसर्जन विधि।

शिव-महिम्न-स्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्य सदृशी
स्तुतिर् ब्रह्मादीनाम् अपि तद् अवसन्नावसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमति परिणामा वधि गृणन्
ममा प्येष स्तोत्रे हर निर् अपवादः परिकरः (1)

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ् मनसयोर्
अतत् व्यावृत्त्या यं चकितम् अभिधते श्रुतिर् अपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविध गुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः (2)

मधु-स्फीता वाचः परमम् अमृतं निर्मितवतः
तव ब्रह्मन् किं वाक् अपि सुरगुरोर् विस्मय पदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन भवतः।
पुनामी त्यर्थेऽस्मिन् पुर मथन बुद्धिः व्यवसिता (3)

तवैश्वर्यं यत् तत् जगत् उदय रक्षा प्रलय कृत्
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण भिन्नासु तनुषु।
अभव्यानाम् अस्मिन् वरद रमणीयाम् अरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः (4)

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायः त्रिभुवनम्
किम् आधारो धाता सृजति किम् उपादानं इति च

अतर्क्यैं श्वर्य्यें त्वय्यन वसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कान्चित् मुखरयति मोहाय जगतः(5)

अजन्मानो लोकाः किम् अवयव वन्तोपि जगतागां
अधिष्ठातारं किं भवविधिर् अनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवन जनने कः परिकरो।
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे (6)

त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवम् इति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परम् इदम् अदः पथ्यम् इति च।
रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजु कुटिल नाना पथ जुषाम्
नृणाम् एको गम्यम्यत्वमसि पयसाम्अर्णव इव (7)

महोक्षः खट्वागं परशुर् अजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेत् ते यत् तव वरद तन्त्रेपकरणम्।
सुरास्तां ताम् ऋद्धिं दधति तु भवद्-भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मा रामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति (8)

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलम् अपरस्त्वं ध्रुवम् इदं
परो ध्रौव्या ध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
समस्ते प्ये तस्मिन् पुर मथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता(9)

तवैश्वर्यं यत्नाद् यत् उपरि विरिंचिर् हरिर् अधः
परिच्छेतुं यातौ अनलम् अनल स्कन्ध वपुषः।

ततो भक्ति श्रद्धा भर गुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम् अनुवृत्तिर्न्र्थ फंलति (10)

अयत्नाद् आसाद्य त्रिभुवनम् अवैरी व्यतिकरम्
दशास्यो यत् बाहून् अमृत रण कण्डू पर वशान्
शिरः पद्मश्रेणी रचित चरणाम्भोरुह बलेः
स्थिरायास् त्वद् भक्तेः त्रिपुरहर विस्फूर्जितम् इदम् (11)

अमुष्य त्वत्सेवा समअधिगतसारं भुजवनम्
बलात् कैलासेऽपि त्वद् अधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलस चलितांगुष्ठ शिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीत् ध्रुवम् उपचितो मुह्यति खलः (12)

यत् ऋद्धिं सुत्राम्णो वरद् परमोच्चैर् अपि सतीम्
अधाश्चक्रे बाणः परिजन विधेय त्रिभुवनः।
न तत् चित्रं तस्मिन् वरि वसि तरि त्वत् चरणयोः
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः (13)

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकित देवासुर कृपा
विधोयस्याऽऽसीद् यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाध्यो भुवन भय भंग व्यसनिनः (14)

असिद्धार्था नैव क्वचित् अपि सदेवा सुर नरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।

स पश्यन् ईश त्वाम् इतर सुर साधारणम् अभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः (15)

महीं पादा घाताद् व्रजति सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोर् भ्राम्यद् भुज परिघ रुग्ण ग्रहगणम्।
मुहर् द्यौर् दौस्थ्यं यात्यनि भृत जटा ताडिततटा
जगत् रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता (16)

वियत् व्यापी तारा गण गुणित फेनोद् गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषत लघु दृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधि-वलयं तेन कृतमि-
त्यने नैवोन्नेयं धृत-महिम दिव्यं तव वपुः (17)

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिर् अगेन्द्रो धानुरथो
रथांगे चन्द्रार्को रथ चरण पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुर तृणं आडम्बर विधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्रः :प्रभुधियः (18)

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिम् आधाय पदयोः
यद्एकोने तस्मिन् निजम् उदहरत् नेत्र कमलम्।
गता भक्त्युद्रेकः परिणतिम् असौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर हर जागर्ति जगताम् (19)

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।

अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ परिकरः कर्मसुजनः (20)

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिर् अधीशस्तनुभृताम्
ऋषीणाम् आर्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः
क्रतुभ्रंशस् त्वत्तः क्रतुफल विधान व्यसनिनो
ध्रुवं-कर्तुः श्रद्धा विधुरम् अभिचाराय हि मखाः (21)

प्रजानाथं नाथ प्रसभम् अभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद् भूतां रिर मयिषु मृष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणेर्यातं दिवम्अपि सपत्र कृतम् अमुम्
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृग व्याध रभसः (22)

अपूर्वं लावण्यं विवसन तनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि सकोप व्यतिकरः
यतो भग्ने गुह्ये सकृदऽपि सपर्यां विदधतां
ध्रुवं मोक्षोऽश्लीलं किम् अपि पुरुषार्थ प्रसविते (23)

स्वलावण्या शंसा धृत धनुषम् अह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर मथन पुष्पायुधम् अपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहाध घटनात्
अवैति त्वाम् अद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः (24)

श्मशानेष्वा क्रीडा स्मर हर पिशाचाः सहचराः
चिता भस्मा लेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः।

नमन् मुक्तः सम्प्र त्यतनुर् अहम् अग्रेप्यनतिमान्
महेश क्षन्तव्यं तद् इदम् अपराध द्वयमपि (30)

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो:
नमः क्षोदिष्ठाय स्मर-हर महिष्ठाय च नमः
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तत् इदम् इति सर्वाय च नमः (31)

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबल तमसे तत् संहारे हराय नमोनमः
जन सुख कृते सत्त्वो द्रिक्तौ मृडाय नमोनमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमोनमः (32)

श्री पुष्पदन्त मुख पंकज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विष हरेण हर प्रियेण
कण्ठ स्थितेन पठितेन गृह स्थितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः (33)

इति

अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलम् असि (25)

मनः प्रत्यक्-चित्ते सविधम्-अवधायात्त मरुतः
प्रहृष्यद् रोमाणः प्रमद सलिलोत् संचित दृशः।
यदा लोक्या ह्लादं ह्रद इव निमज्ज्या मृतमये
दध त्यन्त स्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किलभवान्(26)

त्वम् अर्कस्त्वं सोमस्त्वम् असि पवनस्त्वं हुतवहः
त्वम् आपस्त्वं व्योम त्वम् उधरणिर् आत्मा त्वमिति च।
परिचिछन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम्
न विद्मस्तत् तत्त्वं वयमिह तु यत् त्वं न भवसि(27)

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनम् अथो त्रीन् अपि सुरान्
अकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिर्अभि दधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिर् अवरुन्धानम् अणुभिः
समस्त व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् (28)

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिर् अथोग्रः सह महान्
तथा भीमेशानाविति यद् अभिधानाष्टकम् इदम्
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिर् अपि
प्रिया यास्मै धाम्ने प्रणिहित नमस्योस्मिभवते (29)

वपुष्प्रार्दुभावात् अनमितम् इदं जन्मनि पुरा
पुरारे नैवाहं क्वचित् अपि भवन्तं प्रणतवान्।

भजन

1. हे दयामय आपका, हमको सदा आधाार हो,
   आपके भक्तों से ही, भरपूर यह परिवार हो।
2. छोड़ देवें काम को अरु, क्रोध को मद मोह को,
   शुद्ध और निर्मल हमारा, सर्वदा आचार हो।
3. प्रेम से मिलकर के सारे, गीत गावें आपके,
   दिल में बहता आपका ही, प्रेम पारावार हो।
4. जय पिता जय जय पिता हम, जय तुम्हारी गा रहें
   रात दिन घर में हमारे, आपकी जयकार हो।
5. धन धान्य घर में जो सभी कुछ, आपका ही है दिया,
   उसके लिये प्रभु आपका, घन्यवाद सौ सौ बार हो।
6. धन रहे या ना रहे, इसकी नहीं परवाह हो,
   आपकी भक्ति से ही, धनवान यह परिवार हो।

प्रभो! शम्भो! दीनं विहितशरणं त्वत् चरणयो:
भवारण्यात् अस्मात् विषम विषयाशीविषपृतात्।
सम् उद्धृत्य श्रद्धा विधुरम् अपि बद्धादरकरम्,
दयादृष्टया पश्यन् निज तनयम् आत्मी कुरु शिव।

अर्थ - हे सर्वशक्तिमान् सुख और मंगल को देने वाले परमात्मन्। मुझ दीनहीन, आपके चरणों में शरण आये हुए को, श्रद्धाविहीन को आदरपूर्वक हाथ जोडे हुए को कठिन विषयरूपी सर्पों से भरे हुए इस संसाररूपी वन से उद्धार करके अपने पुत्र को दयादृष्टि से देखते हुए अपनाइए।

ओंकारनाथ गंजू

व्यवसाय से शिक्षक रहें श्री ओंकारनाथ गंजू का कार्यक्षेत्र विविधता पूर्ण रहा है। साहित्यिक गतिविधियों में इसका सक्रिय योगदान रहा है। इन्होंने 'मिलचार' एवं 'पेरणा' नाम की विद्यालय पत्रिकाओं में हिन्दी विभाग का सम्पादन क्रमशः आठ तथा सात वर्षों तक किया। एक स्थानीय प्रतिष्ठित उच्च माध्यमिक शिक्षा संस्था में साहित्यिक गतिविधियों के प्रभारी का दायित्व कई वर्षों तक निभाया। कई अंग्रेजी तथा उर्दू पुस्तिकाओं का हिन्दी रूपान्तरण किया है। जिन में Accounts of Gumphas of Leh' (Ladakh) ''मैं कौन हूँ?'' आदि सम्मिलित है। 'भगवान गोपीनाथ सहसनामावली' के सम्पादन में इनका विशेष योगदान रहा है। इन्हें जम्मू कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) द्वारा सम्मानित किया गया है। गत सोलह वर्षों से निरंतर विभिन्न साहित्यिक विषयों पर लिखते रहें हैं। आशा है कि भविष्य में भी इसी प्रकार अपनी क्षमता द्वारा ऐसे ही कार्यों में अपना योग देते रहेंगे।

VATAK POOJA
वटक पूजा

FOR THE FIRST TIME A COMPLETE , COMPREHENSIVE FULLY ILLUSTRATED,

VATAK POOJA

WITH THE AIM TO PRESERVE THE CULTURAL AND RELIGIOUS HERITAGE OF KASHMIRI PANDITS THIS SELF HELP BOOK IS DESIGNED TO GIVE YOU AN EASY STEP WISE APPROACH TO VATAK POOJA .PLEASE STUDY THE BOOK AND LISTEN TO CASSEETTES/CD BEFORE HAND

Available at: JAMMU

Khir Bhawani Peeth
Bhawani Nagar, Janipur,
Mob:-9419136545

Vijayeshwar Jyotish Karyalay,
J K Book Shop
Near Matador Stand, Patta Bohri, Talab-Tilloo,

232,C Ram Vihar Old Janipur Jammu
Mob:-09469372708

₹ 250/-
With Stencil

COVER AND ILLUSTRATIONS BY SUNIL HANDU